प्रयागराज, रविवार 02 अगस्त 2026 से 08 अगस्त 2026 तक
वर्ष-13 , अंक-31
पृष्ठ- 8 मूल्य: 3 रूपये

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार
हिन्दी साप्ताहिक

E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com
website:www.adhuniksamachar.com

60 हजार प्रवासी स्पेन में घुसने पहुंचे, 34 की मौत,मोरक्को से समुद्र में तैरकर आए थे, बॉर्डर पर सेना ने रोका तो मची भगदड़

सिउटा। स्पेन में जबरन घुसने की कोशिश के दौरान 34 अफ्रीकी प्रवासियों की मौत हो गई। न्यूज एजेंसी एपी के मुताबिक, घटना तब हुई, जब गुरुवार सुबह 3 हजार प्रवासी एकसाथ स्पेन में प्रवेश करने की कोशिश कर रहे थे। सीमा पर पुलिस की घेराबंदी और सुरक्षा बाड़ के बीच संकरे रास्तों के कारण लोग एक-दूसरे पर गिर पड़े। भीड़ में दबने, दम घुटने और समुद्र में डूबने के कारण यह हादसा हुआ। इस दौरान स्पेन और मोरक्को के 100 से ज्यादा सैनिक भी घायल हो गए। स्पेनिश सरकार की तरफ से जानकारी मिली है कि 24 घंटे में मोरक्को की तरफ से करीब 60 हजार लोगों के तैरकर या पैदल चलकर स्पेनिश शहर स्यूटा में प्रवेश कर चुके है। यह स्टूटा की आबादी का 70फीसदी है। मोरक्को से एक साथ हजारों प्रवासी स्पेन में क्यों घुसे-अफ्रीकी और एशियाई देशों के प्रवासी बेहतर जीवन की तलाश में यूरोपीय देशों में घुसना चाहते हैं। सिउटा मोरक्को के उत्तरी तट पर स्थित एक स्पेनिश शहर है। यहां घुसने के बाद प्रवासियों को यूरोपीय संघ के क्षेत्र में एंट्री मिल जाती है। स्यूटा से ही यूरोप में घुसने की सबसे ज्यादा कोशिश क्यों-स्यूटा भले ही भौगोलिक तौर पर अफ्रीका में है, लेकिन यह स्पेन और यूरोपीय संघ (ईयू) का हिस्सा है। यानी अगर कोई प्रवासी स्यूटा में घुस जाता है, तो वह यूरोप की सीमा तक पहुंच जाता है। यही वजह है कि हजारों लोग हर साल

यहां से यूरोप में दाखिल होने की कोशिश करते हैं। स्यूटा ऐसा शहर है जहां अफ्रीका और यूरोप की सीधी जमीनी सीमा मिलती है। इसलिए बेहतर नौकरी और अच्छी जिंदगी की तलाश में मोरक्को समेत कई अफ्रीकी देशों के लोग सबसे ज्यादा इस रास्ते को चुनते हैं। इस सप्ताह की शुरुआत में 1,500 लोग स्यूटा में घुसे-स्यूटा में घुसने के लिए कुछ लोग समुद्र में तैरकर सीमा पार करते हैं, कुछ छोटी नावों का सहारा लेते हैं। वहीं बड़ी संख्या में लोग सीमा पर लगी ऊंची बाड़ पर चढ़कर या उसे काटकर अंदर जाने की कोशिश करते हैं। इस सप्ताह की शुरुआत में ही करीब 1,500 प्रवासी स्यूटा में प्रवेश कर चुके थे। इसके बाद गुरुवार को हालात अचानक बिगड़ गए। इससे पहले साल 2021 में सिर्फ दो दिनों के भीतर 10 हजार से ज्यादा लोग स्यूटा में घुस गए थे। वहीं 2022 में मेलिला में सीमा पार करने की कोशिश के दौरान मची भगदड़ में कम से कम 23 प्रवासियों की मौत हो गई थी। प्रवासियों को रोकने के लिए स्पेन ने सेना भेजी-स्पेन सरकार के अधिकारी फर्नांडो रोड्रिगेज कॉन्ट्रेरास ने कहा कि शुरुआती अनुमान के मुताबिक हजारों, संभवतः कई दस हजार लोग एक साथ मोरक्को से स्यूटा में घुस आए। हालात को देखते हुए स्पेन सरकार ने सीमा पर सुरक्षा बढ़ा दी है। इसके तहत सेना की अतिरिक्त टुकड़ियां तैनात की गई हैं, जबकि हवाई और नौसैनिक निगरानी भी बढ़ाई गई है। समुद्र के रास्ते आने वाले प्रवासियों पर नजर रखने के लिए गोताखोरों की टीमों को भी तैनात किया गया है। वहीं, यूरोपीय संघ (ईयू) ने भी स्पेन की मदद की पेशकश की है। स्यूटा और मेलिला को लेकर स्पेन-मोरक्को में विवाद-मोरक्को को 1956 में स्पेन से आजादी मिली थी। हालांकि स्पेन ने स्यूटा और मेलिला को आजाद नहीं किया। मोरक्को का कहना है कि स्यूटा और मेलिला भी उसे वापस मिलने चाहिए। ये दोनों शहर अफ्रीकी महाद्वीप में हैं और मोरक्को का हिस्सा हैं। स्पेन का कहना है कि स्यूटा पर उसका कब्जा 350 साल से है। तब मोरक्को भी नहीं बना था। स्यूटा पर पुर्तगाल ने 1415 में कब्जा किया था। 1668 में पुर्तगाल में इसे स्पेन को दे दिया। स्पेन ने स्यूटा छोड़ा क्यों नहीं? 1. रणनीतिक वजह-स्यूटा जिब्राल्टर स्ट्रेट के पास है। यहां से भूमध्य सागर और अटलांटिक महासागर के बीच आने-जाने वाले जहाजों पर नजर रखी जा सकती है। 2. राजनीतिक वजह-यदि स्पेन स्यूटा छोड़ देता है, तो दूसरे शहर मेलिला पर भी दबाव बढ़ सकता है।

इससे स्पेन के लिए बड़ा राजनीतिक और सुरक्षा संकट पैदा हो सकता है। 3. स्थानीय लोगों की इच्छा- स्यूटा के अधिकांश निवासी खुद को स्पेनिश मानते हैं। वे समृद्ध देश स्पेन के साथ ही रहना चाहते हैं।

> यह स्यूटा के इतिहास में यह सबसे चुनौतीपूर्ण समय में से एक है। अचानक हजारों की संख्या में अनियंत्रित भीड़ के सड़कों पर आ जाने से स्थानीय लोगों में डर और असुरक्षा का माहौल बन गया है। स्कूल, दुकानें और बाजार बंद हैं। शहर में आपातकाल जैसी स्थिति है।
>
> जुआन जीसस विवास
> सिउटा के राष्ट्रपति

कश्मीर में आतंकियों ने नाम पूछकर मजदूरों को मारी गोली, मरने वाले दोनों हिंदू छत्तीसगढ़ के

श्रीनगर। दक्षिण कश्मीर के कुलगाम में शुक्रवार को पहलगाम जैसा हमला हुआ। आतंकवादियों ने ईंट-भट्ठे पर काम कर रहे प्रवासी मजदूरों के नाम पूछे। फिर छत्तीसगढ़ के दो हिंदुओं को समूह से अलग करके गोली मार दी। हमले में एक मजदूर की मौके पर और दूसरे मजदूर की अस्पताल में मौत हो गई।मारे गए युवक की पहचान 24 साल के दीपक रात्रे और 28 साल के भूपेंद्र के रूप में हुई है। अधिकारियों के अनुसार, हमला कुलगाम से करीब 20 किलोमीटर दूर केलाम में हुआ। इस दौरान 3-4 राउंड फायर किए गए। आतंकियों ने हमले से पहले रेकी करके ये इलाका चुना था। घटना के समय वहां कई प्रवासी मजदूर मौजूद थे, लेकिन हिंदू सिर्फ यही दोनों थे। आतंकी हमले की खबर के तुरंत बाद सुरक्षा बलों ने पूरे इलाके की घेराबंदी कर दी है। गाड़ियों की चेकिंग की जा रही है। वहीं पुलिस की गाड़ियां आतंकियों की तलाश में जुट गई हैं। एक आतंकी के पाकिस्तानी होने की आशंका-सूत्रों ने बताया कि जांच एजेंसियों को हमले में एक स्थानीय और एक पाकिस्तान के आतंकी के शामिल होने का संदेह है। शुरुआती जांच का फोकस मोहम्मद लतीफ पर है।

चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति पर सरकार की दलील,सुप्रीम कोर्ट से कहा-पीएम लोकतंत्र के विपरीत जाएंगे, यह सोचना गलत

नयी दिल्ली। मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) और चुनाव आयुक्तों (ईसी) की नियुक्ति से जुड़े मामले में सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार

को अपना फैसला सुरक्षित रख लिया। अदालत अब यह तय करेगी कि नियुक्ति प्रक्रिया को नियंत्रित करने वाले 2023 के कानून को चुनौती देने वाली याचिकाओं को सुनवाई के लिए पांच सदस्यीय पीठ के पास भेजा जाए या नहीं। वहीं, इस कानून का बचाव करते हुए केंद्र ने सुप्रीम कोर्ट में दलीली दी- यह मान लेना गलत होगा कि चयन समिति में संख्या बल होने के कारण प्रधानमंत्री और मंत्री 'बुरी मंशा' से काम करेंगे या लोकतंत्र के खिलाफ जाएंगे। केंद्र की तरफ से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने जस्टिस दीपांकर दत्ता और जस्टिस सतीश चंद्र शर्मा की पीठ से कहा कि अगर प्रधानमंत्री के फैसले को भरोसे लायक नहीं माना जाएगा, तो क्या कैबिनेट चुनते समय भी उन्हें किसी पूर्व जज या बाहरी व्यक्ति से सलाह लेने की शर्त रखी जाएगी? यहां प्रधानमंत्री पर भरोसा करने का सवाल नहीं: कोर्ट-सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता की इस दलील पर जस्टिस दत्ता ने कहा कि अदालत प्रधानमंत्री पर भरोसा नहीं करती, ऐसा सवाल ही नहीं है। उन्होंने कहा- हम प्रधानमंत्री पर भरोसा क्यों नहीं करेंगे? निश्चित रूप से करेंगे। उन्होंने यह भी याद दिलाया कि पहले भी सुप्रीम कोर्ट ने प्रधानमंत्री पर भरोसा जताया था कि आपराधिक पृष्ठभूमि वाले लोगों को मंत्री नहीं बनाया जाएगा। जस्टिस दत्ता ने कहा कि असली मुद्दा यह है कि चुनाव आयुक्त स्वतंत्र व्यक्ति होना चाहिए। उन्होंने पूछा कि क्या चयन समिति में ऐसे लोग नहीं होने चाहिए, जिससे निष्पक्षता दिखाई भी दे। हम यह नहीं कह रहे कि इस समिति ने निष्पक्षता हासिल नहीं की, लेकिन अब स्थिति 2:1 की है। प्रधानमंत्री की तरफ दो और विपक्ष की तरफ एक। चयन प्रक्रिया में सीजेआई को बाहर रखने पर है विवाद-यह कानून दिसंबर 2023 में संसद से पारित हुआ था और 29 दिसंबर 2023 को राष्ट्रपति की मंजूरी मिली थी। याचिकाकर्ताओं का कहना है कि यह कानून सुप्रीम कोर्ट के 2023 के फैसले के खिलाफ है, क्योंकि इसमें चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति प्रक्रिया से भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) को बाहर रखा गया है। नए कानून में चयन समिति में कौन-कौन हैं? 2023 के कानून के अनुसार, मुख्य चुनाव आयुक्त और चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति के लिए बनी चयन समिति में प्रधानमंत्री, प्रधानमंत्री द्वारा नामित एक केंद्रीय मंत्री और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष (या सबसे बड़े विपक्षी दल के नेता) शामिल होते हैं।

ईरान पर हमले रोकने का बिल एक वोट से गिरा, मिलिट्री एक्शन का अधिकार अब राष्ट्रपति को, ट्रम्प के एक सांसद ने वोटिंग नहीं की

वॉशिंगटन डीसी। ईरान के खिलाफ सैन्य कार्रवाई रोकने का प्रस्ताव अमेरिकी सीनेट में एक वोट से गिर गया है। गुरुवार को हुई वोटिंग में इसके पक्ष में 49 और विरोध में

50 वोट पड़े। ट्रम्प की पार्टी के एक सांसद डेव मैककॉर्मिक वोटिंग में शामिल नहीं हुए। अगर यह प्रस्ताव पास हो जाता, तो अमेरिकी राष्ट्रपति को ईरान पर हमलों से पहले संसद की मंजूरी लेना जरूरी हो जाता। यानी राष्ट्रपति खुद यह फैसला नहीं ले सकते थे। ईरान जंग को लेकर विपक्षी सांसद मांग कर रहे हैं कि ऐसे किसी भी सैन्य अभियान पर अंतिम फैसला संसद ही ले। ताजा घटनाक्रम के बाद इसे सीनेट में लाने के लिए दोबारा कोशिश करनी होगी।सैन्य कार्रवाई रोकने का विधेयक फिलहाल अमेरिकी सीनेट की विदेश मामलों से जुड़ी कमेटी के पास है। पिछले 24 घंटे के 5 बड़े अपडेट्स-1. जंग में पहली बार मिस्र पर हमलाः मिस्र के बंदरगाह पर ड्रोन हमले में दो जहाजों में आग लगी। ईरान को इस हमले का जिम्मेदार माना जा रहा है। 2. अमेरिका का 10 ईरानी शहरों पर हमलाः अमेरिकी सेना ने ईरान पर बड़े हवाई हमले किए। बंदर अब्बास, किश और क़ेश्म द्वीप में धमाकों की खबर है। 3. ईरान का जवाबी हमलाः रिवोल्यूशनरी फोर्स ने कहा कि अमेरिकी हमले के बाद उन्होंने कुवैत और जॉर्डन में अमेरिकी ठिकानों को निशाना बनाया। 4. कुवैत में चीनी कंपनी की बिल्डिंग पर हमलाः ईरानी हमले में उत्तरी कुवैत में एक चीनी कंपनी की इमारत पर हमला हुआ, एक कर्मचारी की मौत। 5. रेड सी की सुरक्षा के लिए गठबंधन बना रहा सऊदीः रेड सी (लाल सागर) में जहाजों की सुरक्षा के लिए सऊदी एक अंतरराष्ट्रीय गठबंधन बनाने जा रहा है। अब तक 14 देशों ने इससे जुड़ने में इच्छा जताई है। चीन बोला-कुवैत में कोई चीनी नागरिक घायल नहीं हुआ-चीन ने कहा है कि कुवैत पर ईरान के हमले में उसका कोई भी नागरिक घायल नहीं हुआ है। चीन के विदेश मंत्रालय ने शुक्रवार को कहा कि जांच के बाद उन्हें यह जानकारी मिली है। इससे पहले गुरुवार को कुवैत में एक चीनी ईमारत पर ड्रोन हमला हुआ था। यह हमला ईरान की तरफ से किया गया था। कई मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया गया था कि हमले में चीनी नागरिक घायल हुआ है। ईरानी मौलाना बोले- अमेरिका के साथ समझौता करना धोखा होगा-ईरान के बड़े धर्मगुरु अहमद अलमोलहोदा ने कहा है कि अमेरिका के साथ युद्धविराम करना एक धोखा होगा।

सड़कों पर पशुओं से हादसों में मुआवजा दिया जाए-सुप्रीम कोर्ट
केंद्र और राज्य सरकारें इसके लिए कानूनों में संशोधन करें

नयी दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सड़कों पर घूम रहे आवारा पशुओं से होने वाले हादसों पर गंभीर चिंता जताई है। कोर्ट ने कहा- पशुओं मुआवजा-कोर्ट ने केंद्र और राज्य सरकारों को यह सलाह पंजाब के संगरूर की रहने वाली निशा की याचिका पर दी। निशा के पति

को नेशनल हाईवे, सड़कों और गलियों में यूं ही नहीं छोड़ सकते। वे नेचुरल स्पीड ब्रेकर नहीं हैं। जस्टिस संजय करोल और जस्टिस एन. कोटिश्वर सिंह की पीठ ने शुक्रवार को केंद्र और राज्य सरकारों से ऐसे हादसों के पीड़ितों को मुआवजा देने का नियम बनाने को कहा। साथ ही सुझाव दिया कि जरूरत हो तो इसके लिए कानूनों और नियमों में संशोधन भी किया जाए। सुप्रीम कोर्ट- लावारिस मवेशी पूरे देश की समस्या बन चुके हैं। हाल के वर्षों में पशुओं के हमलों में सालाना 1300 से अधिक लोगों की मौत हुई है। इसलिए इस मुद्दे को राष्ट्रीय स्तर पर देखना चाहिए। सांड के हमले में पति की मौत पर रु15 लाख विजय की 21 सितंबर 2007 को सड़क पर पैदल जाते समय आवारा सांड के हमले में मौत हो गई थी। कोर्ट ने राज्य सरकार को आदेश दिया कि महिला को चार सप्ताह में रु15 लाख मुआवजा दें। साथ ही कोर्ट ने कहा- हालांकि, इसे भविष्य के मामलों में नजीर नहीं माना जाएगा। पशुपालकों को पूरे जीवन अपने पशु की जिम्मेदारी निभानी होगी-कोर्ट ने कहा- लावारिस पशुओं की समस्या का सबसे बड़ा कारण उन्हें आर्थिक रूप से अनुपयोगी होने पर छोड़ देना है। पशुपालक सिर्फ पशु पालने तक सीमित नहीं रह सकते, बल्कि उनके पूरे जीवन की जिम्मेदारी भी उनकी है। यदि किसी कारण पशु नहीं रख सकते तो गौशाला या आश्रय गृह में सौंपें, सड़कों पर न छोड़ें। समाज उपयोगिता खत्म होने पर पशु को छोड़ देता है। वहीं, उनके दूसरे उपयोगों का विरोध करता है। यह भी समस्या की एक वजह है।

ई20 फ्यूल के खिलाफ आम आदमी पारटी का आज टाउनहॉल,केजरीवाल बोले- सरकार इसे वापस ले
इस पर चर्चा करेंगे; जिनकी गाड़ियां खराब हुईं वे भी पहुंचेंगे

नयी दिल्ली। आम आदमी पार्टी 1 अगस्त को ई20 फ्यूल के मुद्दे पर 'नेशनल टाउन हॉल' करेगी। पार्टी ने कहा है कि सभी

विशेषज्ञों को एक मंच पर लाया जाएगा। अरविंद केजरीवाल ने बुधवार को कहा कि लोग ई 20 फ्यूल की वजह से भारी परेशानी का सामना कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि गाड़ियां खराब हो रही हैं। माइलेज कम हो रहा है। इससे पहले कि यह मुद्दा एक बड़े आंदोलन का रूप ले ले, प्रधानमंत्री को हस्तक्षेप कर इसे हल करना चाहिए। भारत में क्यों हो रहा है ई20 पेट्रोल का विरोध? भारत में 20फीसदी एथेनॉल और 80फीसदी पेट्रोल के इस मिश्रण (ई20) का विरोध हो रहा है। खासकर 2023 से पहले बनी पेट्रोल गाड़ियों के मालिक परेशान हैं। उनका दावा है कि इस फ्यूल से गाड़ियों का माइलेज कम हो रहा है, मेंटेनेंस का खर्च बढ़ गया है। इंजन के पार्ट्स जल्दी खराब हो रहे हैं। टाउन हॉल में शामिल होने की प्रक्रिया-आप ने बताया कि इस टाउन हॉल में हजारों लोगों के शामिल होने की उम्मीद है। कार्यक्रम दोपहर 12 बजे शुरू होगा। दिल्ली और आसपास के शहरों के लोग जो व्यक्तिगत रूप से शामिल हो सकते हैं, उन्हें सुबह 11:30 बजे तक कॉन्स्टिट्यूशन क्लब पहुंचना होगा। जो लोग दिल्ली से बाहर हैं वे ऑनलाइन जुड़ सकते हैं।

इच्छुक लोग साझा किए गए नंबर पर व्हाट्सएप मैसेज भेज सकते हैं। शुक्रवार शाम तक हम उन्हें एक लिंक भेजेंगे, जिसके जरिए वे शनिवार को चर्चा में शामिल हो सकेंगे।

इस कार्यक्रम में विशेषज्ञ और इस मुद्दे से प्रभावित लोग एक साथ आएंगे। हर किसी को बोलने का मौका मिलेगा और हम सरकार पर ई20 नीति वापस लेने का दबाव बनाने के लिए भविष्य की रणनीति भी तैयार करेंगे। इससे पहले आप ने प्रधानमंत्री को संबोधित एक ऑनलाइन याचिका शुरू की थी, जिस पर दो लाख से अधिक लोगों ने हस्ताक्षर किए हैं। शनिवार के कार्यक्रम के बाद, वह प्रधानमंत्री आवास जाकर यह याचिका सौंपेंगे।

किसान सम्मान निधि योजना 5 साल बढ़ाई गई,कैबिनेट की बैठक में फैसला, तेल-गैस खोज के लिए 84 हजार करोड़ रुपए मंजूर

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में शुक्रवार को केंद्रीय कैबिनेट और सीसीए की बैठक हुई। इसमें समुद्र मंथन, सूर्य सरोवर योजना, पीएम सम्मान निधि और खेलो इंडिया

जैसी कई योजनाओं पर फैसले लिए गए। बैठक के बाद केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कैबिनेट ब्रीफिंग को संबोधित किया।उन्होंने कहा- समुद्र मंथन नाम की एक बड़ी योजना को मंजूरी दी गई है। इसका मकसद देश में तेल और गैस उत्पादन के लिए खोज करना है और इसके लिए 84,084 करोड़ रुपए का बजट रखा गया है। यह देश में तेल और गैस की बढ़ती मांग के लिए एक बड़ा गेम-चेंजर साबित होगा। उन्होंने कहा- केंद्रीय कैबिनेट ने प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना को भी वित्त वर्ष 2026-27 से 2030-31 तक अगले पांच वर्षों के लिए बढ़ा दिया है। इस अवधि के लिए सरकार ने 3.15 लाख करोड़ रुपए का बजट आवंटित किया है। अश्विनी वैष्णव केंद्रीय मंत्री-पिछले 5 सालों में योजना के तहत देशभर के किसानों के खातों में करीब 3.10 लाख करोड़ रुपये डाले गए हैं। इस योजना की वजह से 85फीसदी किसानों का करज का बोझ कम हुआ है, इसलिए यह पहल आगे भी जारी रहेगी। सोलर पावर जेनरेशन की मंजूरी- वैष्णव ने कहा- इन फैसलों में सबसे बड़ा फैसला प्रधानमंत्री सूर्य सरोवर योजना पर किया गया है। पीएम मोदी ने इस योजना के तहत वाटर बॉडीज की सतह का इस्तेमाल करके सोलर पावर जेनरेशन करने की मंजूरी दी है। भारत में वाटर बॉडीज का इस्तेमाल करके 102 गीगा वॉट (जीडब्लू) यानी एक लाख मेगावॉट सोलर पावर जेनरेशन करने की क्षमता है। इस योजना का लक्ष्य पूरे देश में कुल 5,000 मेगावाट की फ्लोटिंग सोलर फोटोवोल्टिक क्षमता बनाना है, जिसके लिए पांच साल की अवधि में प्रति मेगावाट 1 करोड़ रुपए की आरि्थक मदद दी जाएगी। खेलो इंडिया योजना के लिए 29,000 करोड़ का आवंटन- मंत्रिमंडल का एक अन्य महत्वपूर्ण फैसला देश में खेल संस्कृति और बुनियादी ढांचे को मजबूत करने से संबंधित है। केंद्रीय मंत्री ने जानकारी दी कि खेलो इंडिया योजना को विस्तार देते हुए अगले पांच वर्षों के लिए 29,000 करोड़ रुपए का बजट आवंटित किया गया है। उन्होंने याद दिलाया कि पिछले एक दशक में खेलों को बढ़ावा देने के लिए लिए गए निरणयों के कारण ही आज भारत ओलंपिक, एशियाई खेलों और राष्ट्रमंडल खेलों में ढेरों पदक जीत रहा है। इस भारी-भरकम बजट का मुख्य उद्देश्य आगामी ओलंपिक, पैरालंपिक और विशेष रूप से 2030 में भारत द्वारा आयोजित किए जाने वाले राष्ट्रमंडल खेलों के लिए भारतीय खिलाड़ियों की तैयारियों को विश्वस्तरीय बनाना है। नाविकों की सुरक्षा पर सीसीएस की बैठक- इसके साथ ही कैबिनेट कमेटी ऑन सिक्योरिटी (सीसीएस) की एक अहम बैठक भी हुई। इसमें पश्चिम एशिया की वर्तमान तनावपूर्ण स्थिति पर विस्तार से चर्चा की गई। इस दौरान सरकार ने सख्त रुख अपनाते हुए इस बात पर विशेष जोर दिया कि किसी भी परिस्थिति में भारतीय नाविकों की सुरक्षा के साथ कोई समझौता नहीं किया जाएगा। बैठक में साफ किया गया कि भारतीय नाविकों के साथ होने वाली किसी भी अप्रिय घटना को सरकार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पुरजोर तरीके से उठाएगी।

प्रयागराज में सॉल्वर गैंग का भंडाफोड़, आईटीआई नैनी के प्रिंसिपल समेत 11 गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। उत्तर प्रदेश स्पेशल

टास्क फोर्स (एसटीएफ) ने प्रयागराज के राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई), नैनी में आयोजित अखिल भारतीय व्यावसायिक परीक्षा की कंप्यूटर आधारित परीक्षा (सीबीटी) में बड़े फर्जीवाड़े का खुलासा किया है। एसटीएफ ने इस मामले में संस्थान के प्रिंसिपल, परीक्षा प्रभारी, प्रशिक्षकों और सॉल्वर सहित कुल 11 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। जांच में सामने आया है कि असली परीक्षार्थियों की जगह सॉल्वर बैठाकर परीक्षा दिलाई जा रही थी। आरोपियों द्वारा अभ्यर्थियों से मोटी रकम लेकर उन्हें परीक्षा में पास कराने का खेल संचालित किया जा रहा था। एसटीएफ की कार्रवाई के दौरान रु5.10 लाख नकद, कंप्यूटर उपकरण, मोबाइल फोन, परीक्षा से संबंधित दस्तावेज और अन्य महत्वपूर्ण सामग्री बरामद की गई। प्रारंभिक जांच में यह भी पता चला है कि संगठित तरीके से सॉल्वर गैंग परीक्षा प्रक्रिया में हस्तक्षेप कर अभ्यर्थियों को अवैध लाभ पहुंचा रहा था। एसटीएफ ने मामले में तत्काल कार्रवाई करते हुए सभी आरोपियों को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है। इस संबंध में थाना नैनी, कमिश्नरेट प्रयागराज में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है और पूरे नेटवर्क की जांच की जा रही है। अधिकारियों का कहना है कि मामले में शामिल अन्य लोगों की भूमिका की भी जांच की जा रही है तथा साक्ष्यों के आधार पर आगे की विधिक कार्रवाई की जाएगी।

जिलाधिकारी ने निर्माणाधीन सभागार एवं पुस्तकालय का किया स्थलीय निरीक्षण, गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध ढंग से कार्य पूर्ण कराने के दिए निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत

कौर ब्रोका ने आज अवध केसरी राना बेनी माधव बख्श सिंह की स्मृति में निर्माणाधीन सभागार एवं पुस्तकालय का स्थलीय निरीक्षण कर निर्माण कार्यों की प्रगति का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान परियोजना के फेज-1 का शत-प्रतिशत कार्य पूर्ण पाया गया। सभागार में लाइट, साउंड सिस्टम सहित अन्य आवश्यक कार्य भी पूर्ण हो चुके हैं। कार्यदायी संस्था उत्तर प्रदेश प्रोजेक्ट कॉरपोरेशन लिमिटेड के प्रतिनिधियों ने जिलाधिकारी को अवगत कराया कि परियोजना के फेज-2 में स्ट्रक्चर का कार्य पूर्ण कर लिया गया है तथा फिनिशिंग का कार्य प्रगति पर है।जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि निर्माण कार्यों को गुणवत्तापूर्ण, निर्धारित मानकों के अनुरूप एवं समयबद्ध ढंग से पूर्ण कराया जाए। उन्होंने निर्माणाधीन पार्किंग के कार्य को भी शीघ्र पूर्ण कराने के निर्देश दिए, ताकि परियोजना का समुचित एवं प्रभावी उपयोग सुनिश्चित हो सके। निरीक्षण के दौरान अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) सिद्धार्थ, जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी सुधीर गिरि, उत्तर प्रदेश प्रोजेक्ट कॉरपोरेशन लिमिटेड के अवर अभियंता विनय कुमार, सहायक प्रोजेक्ट अभियंता संदीप कुमार सहित संबंधित अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

मुख्य विकास अधिकारी ने जिला उद्योग बन्धु समिति की बैठक कर उद्यमियों की समस्याओं को शीर्ष प्राथमिकता पर निस्तारित करने के दिए निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। मुख्य विकास अधिकारी हर्षिका सिंह की अध्यक्षता में गुरूवार को संगम

सभागार में जिला उद्योग बन्धु समिति की बैठक आयोजित हुई। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी ने सभी सम्बंधित विभागों के अधिकारियों को उद्यमियों की समस्याओं को शीर्ष प्राथमिकता पर निस्तारित करने के लिए कहा है। बैठक में विद्युत विभाग, क्षेत्रीय प्रबंधक यूपीसीडा, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना, मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना, एक जनपद एक उत्पाद, मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान, निवेश मित्र पोर्टल सहित अन्य सम्बंधित विषयों की बिंदुवार समीक्षा की गयी। उन्होंने निवेश मित्र पोर्टल की समीक्षा करते हुए सभी सम्बंधित विभागों के अधिकारियों को निवेश मित्र पोर्टल पर लम्बित आवेदन पत्रों को निर्धारित समय सीमा में अनिवार्य रूप से निस्तारित करने के लिए कहा है। बैठक में पांच बिन्दुओं के प्रकरण पर क्षेत्रीय प्रबन्धक, यूपीसीडा द्वारा समिति को अवगत कराया गया कि सड़क निर्माण का कार्य प्रगति पर है। उ0प्र0 स्टेट यार्न लि0 मेजा की भूमि के सम्बन्ध में क्षेत्रीय प्रबन्धक, यूपीसीडा को निर्देश दिये गये कि उप जिलाधिकारी बारा के कार्यालय से समन्वय कर सम्बन्धित भूमि पर कब्जा प्राप्त करने की कार्यवाही की जाय। डा0 जी0एस0 दरबारी प्रोपाइटर मे0 दरबारी इण्डस्ट्रीज के प्रकरण पर मुख्य विकास अधिकारी ने अधिशासी अभियन्ता बम्हरौली को निर्देश दिये कि अनावश्यक रूप से हो रही विद्युत ट्रीपिंग की समस्या को समाप्त किया जाय। उन्होंने मिनी औद्योगिक आस्थान सोरांव मे सड़क निर्माण एवं बाउण्ड्रीवाल निर्माण के सम्बन्ध में दिनांक 31.07.2026 को भौतिक निरीक्षण करने के लिए कहा है। इस अवसर पर उपायुक्त उद्योग श्री शरद टण्डन, आर0एम0 यूपीसीडा (आनलाइन) अग्निशमन अधिकारी, जिला अग्रणी बैंक प्रबन्धक, डा0 अभिषेक सिंह, श्री विजय उ0प्र0 प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, उप निबन्धक करछना श्री नीरज पाण्डेय (आनलाइन) सहायक आयुक्त उद्योग श्रीमती सारिका सिंह एवं श्री पंकज कुमार मौर्या, विद्युत नोडल एवं विद्युत अधिशासी अभियन्ता, सूचना अधिकारी श्री युवराज सिंह, श्री राकेश कुमार जी0आई0टी0आई0 नैनी, श्री खुर्शीद आलम पर्यटन विभाग एवं औद्योगिक संगठन के पदाधिकारी श्री विनय टण्डन, श्री नटवर लाल, श्री मुरारी लाल अग्रवाल, श्री संतोष त्रिपाठी, यूनाईटेड ग्रुप डा0 जगदीश गुलाटी एवं श्री वी0एन0 सिंह, श्री मनीष केसरवानी, श्रीमती विभा मिश्रा, श्री अनुराग मिश्रा, श्री अजय सिंह गौड़ उद्यमी एवं अन्य विभागों के अधिकारी तथा उद्यमीगण उपस्थित रहे।

डीएम ने वन ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था के लक्ष्य को लेकर विकास एवं आर्थिक गतिविधियों की समीक्षा

सभी विभाग निर्धारित लक्ष्यों की समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण पूर्ति सुनिश्चित करें- जिलाधिकारी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका की अध्यक्षता में

कलेक्ट्रेट सभागार में उत्तर प्रदेश को वन ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था बनाने के लक्ष्य के अंतर्गत जनपद में संचालित विभिन्न विकास एवं आर्थिक गतिविधियों की त्रैमासिक समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में जनपद की आर्थिक प्रगति से जुड़े विभिन्न विभागीय कार्यों, योजनाओं एवं परियोजनाओं की प्रगति की विस्तृत समीक्षा की गई। बैठक में कृषि एवं उद्यानिकी फसलों के उत्पादन एवं उत्पादकता, दुग्ध उत्पादन एवं दुग्ध प्रसंस्करण, उद्योगों के लिए भूमि आवंटन एवं स्वीकृतियां, औद्योगिक इकाइयों की स्थापना एवं पंजीकरण सहित औद्योगिक विकास से संबंधित विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा की गई। इसके साथ ही राजमार्ग, विद्युत ग्रिड, लॉजिस्टिक्स हब, विशेष निवेश जोन, औद्योगिक क्षेत्र एवं अवस्थापना सुविधाओं के निर्माण कार्यों की प्रगति की भी समीक्षा की गई। जिलाधिकारी ने औद्योगिक विद्युत उपभोग, सौर ऊर्जा, सॉफ्टवेयर निर्यात, एसटीपीआई में आईटी इकाइयों के पंजीकरण, नए होटल एवं रेस्टोरेंट की स्थापना, वाणिज्यिक वाहनों के पंजीकरण, पीपीपी मोड पर निर्माणाधीन बस अड्डे, कौशल विकास एवं स्थानीय रोजगार सृजन से संबंधित कार्यों की स्थिति की जानकारी ली। इसके अलावा पर्यटन विकास एवं पर्यटक सुविधाओं, पेट्रोल-डीजल एवं सीएनजी की बिक्री, जिला घरेलू उत्पाद के प्रमुख संकेतकों, जिला अर्थव्यवस्था रिपोर्ट तथा नियोजन विभाग द्वारा वन ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था के संबंध में सौंपे गए अन्य कार्यों की भी समीक्षा की गई।

जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि शासन की प्राथमिकताओं एवं निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप सभी योजनाओं और परियोजनाओं का समयबद्ध, गुणवत्तापूर्ण एवं प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि विभिन्न विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य करते हुए निर्धारित लक्ष्यों की समय से पूर्ति करें तथा जनपद की आर्थिक गतिविधियों, निवेश, रोजगार सृजन एवं औद्योगिक विकास को गति देने में प्रभावी भूमिका निभाएं।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि समीक्षा में सामने आए बिंदुओं पर आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करते हुए प्रगति में अपेक्षित सुधार लाया जाए तथा शासन स्तर से निर्धारित लक्ष्यों की उपलब्धि के लिए निरंतर निगरानी की जाए।

बैठक में मुख्य विकास अधिकारी अंजुलता, उप कृषि निदेशक हिमांशु पाण्डेय, जिला अर्थ एवं सांख्यिकी अधिकारी सुधीर गिरी, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ. कुलदीप द्विवेदी, जिला उद्यान अधिकारी जयराम वर्मा सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

छपरा-सिवान-थावे-मशरख- रेलखंड पर 40बिना,टिकट यात्रियों से वसूला रु20,760 का जुर्माना

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) वाराणसी। बिना टिकट और अनियमित यात्रा करने वालों के खिलाफ वाराणसी मंडल का

अभियान लगातार तेज होता जा रहा है। गुरुवार को छपरा-सिवान-थावे-मशरख रेलखंड पर चलाए गए विशेष सघन टिकट जांच अभियान में रेलवे ने बिना टिकट यात्रा कर रहे 40 यात्रियों को पकड़कर उनसे रु20,760 का जुर्माना एवं किराया वसूल किया। अभियान के दौरान स्टेशनों पर टिकट लेने के लिए यात्रियों की लंबी कतारें भी देखने को मिलीं, जिससे वैध टिकट लेकर यात्रा करने के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ती नजर आई। मंडल रेल प्रबंधक वाराणसी आशीष जैन के निर्देशन तथा वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक प्रशस्ति श्रीवास्तव के नेतृत्व में बिना टिकट एवं अनियमित यात्रा पर प्रभावी अंकुश लगाने के उद्देश्य से यह विशेष अभियान चलाया गया। 30 जुलाई को छपरा, सिवान, थावे, मशरख एवं छपरा कचहरी स्टेशनों को आधार बनाकर छपरा कचहरी-थावे-मशरख रेलखंड पर किलाबंदी करते हुए ट्रेनों की गहन जांच की गई। अभियान के दौरान गाड़ी संख्या 75103 छपरा-थावे डेमू, 55109 थावे-मशरख-छपरा कचहरी सवारी गाड़ी सहित विभिन्न ट्रेनों में टिकट जांच की गई। जांच टीम ने बिना टिकट तथा अनियमित टिकट पर यात्रा कर रहे यात्रियों को मौके पर ही पकड़कर रेलवे अधिनियम के तहत कार्रवाई करते हुए निर्धारित जुर्माना और किराया वसूला। विशेष जांच अभियान का नेतृत्व मुख्य वाणिज्य निरीक्षक थावे विशाल कुमार सिंह ने किया। उनके साथ मुख्य टिकट निरीक्षक सईद अख्तर, टिकट जांच कर्मचारी राजेश सिंह, प्रकाश कुमार, राजीव कुमार, राजेश सिंह, ममता कुमारी और प्रतिमा कुमारी सहित कुल छह टिकट जांच कर्मियों ने रेलवे सुरक्षा बल के दो जवानों के सहयोग से अभियान को सफल बनाया।

रेल अधिकारियों के अनुसार अभियान का उद्देश्य केवल राजस्व की सुरक्षा करना ही नहीं, बल्कि यात्रियों में वैध टिकट लेकर यात्रा करने की आदत विकसित करना भी है। यही वजह रही कि जांच के दौरान संबंधित स्टेशनों के टिकट काउंटरों पर यात्रियों की लंबी कतारें लगी रहीं और अधिकांश यात्रियों ने टिकट लेकर ही यात्रा करना उचित समझा।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक प्रशस्ति श्रीवास्तव ने यात्रियों से अपील की कि वे सदैव वैध टिकट लेकर ही रेल यात्रा करें, रेलवे के नियमों का पालन करें तथा ट्रेनों और रेलवे परिसरों में स्वच्छता बनाए रखने में सहयोग दें।

उन्होंने स्पष्ट किया कि बिना टिकट एवं अनियमित यात्रा के विरुद्ध ऐसे सघन जांच अभियान आगे भी लगातार जारी रहेंगे।

मुख्य प्रचार निरीक्षक हिमांशु राव ने बताया कि रेलवे का यह अभियान यात्रियों में अनुशासित एवं सुरक्षित यात्रा की भावना को मजबूत करने के साथ-साथ रेलवे राजस्व की सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में प्रभावी साबित हो रहा है।

पत्रकार आरव भरद्वाज के बाबा नही रहे

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। प्रयागराज के ए एन आई के पत्रकार आरव भारद्वाज के बाबा श्री राधे कृष्णा पाण्डेय ने आज अंतिम सांस ली। उनकी अंत्येष्टि आज 9:00 बजे रसूलाबाद घाट पर होगी। श्री पांडे अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं उनके एक मात्र पुत्र विमल कुमार पांडे हैं जो वॉलीबॉल के राष्ट्रीय खिलाड़ी भी हैं। आरव के बाबा श्री पांडे की अंतिमयात्रा कल सुबह उनके मीरापुर आवास से रसूलाबाद घाट प्रस्थान करेगी। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया क्लब के सदस्यों ने क्लब के सह कोषाध्यक्ष आरव के बाबा के निधन पर विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की है।

मत्स्य विभाग की विभिन्न योजनाओं के लिए ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि अब 5 अगस्त तक बढ़ी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। मुख्य कार्यकारी अधिकारी, मत्स्य पालक विकास

अभिकरण, रायबरेली इरफानुल्लाह खान ने बताया कि वित्तीय वर्ष 2026-27 में मत्स्य विभाग द्वारा संचालित राज्य सेक्टर की विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत ऑनलाइन आवेदन करने के लिए विभागीय पोर्टल http://fisheries.up.gov.in 16 जुलाई से 31 जुलाई 2026 तक खोला गया था। अधिक से अधिक आवेदन प्राप्त करने के उद्देश्य से ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि 31 जुलाई से बढ़ाकर 5 अगस्त 2026 कर दी गई है। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री मत्स्य संपदा योजना, सघन मत्स्य पालन हेतु एयरेशन सिस्टम स्थापना योजना, उत्तर प्रदेश मत्स्य पालक कल्याण कोष के अंतर्गत मोपेड विद आइस बॉक्स परियोजना, माता सुकेता महिला मत्स्य पालक सशक्तिकरण परियोजना के अंतर्गत श्रेणी-1, 2 एवं 3 के जलाशय वाले जनपदों में केज स्थापना। अंतर्देशीय खारे जल क्षेत्रों में मत्स्यिकी विकास हेतु नए तालाब निर्माण एवं प्रथम वर्ष निवेश योजना एवं उत्तर प्रदेश में मोती संवर्धन योजना तथा विशिष्ट प्रजाति की मत्स्य हैचरी स्थापना योजना के लिए इच्छुक लाभार्थी ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने बताया कि प्रत्येक योजना के लिए अलग-अलग ऑनलाइन आवेदन करना अनिवार्य होगा। योजनाओं का विस्तृत विवरण, इकाई लागत, आवेदन प्रक्रिया तथा आवेदन के साथ संलग्न किए जाने वाले आवश्यक अभिलेख विभागीय वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि यदि भविष्य में योजनाओं के प्रावधानों में कोई संशोधन किया जाता है तो संशोधित प्रावधान ही प्रभावी होंगे। पूर्व वर्षों में जिन आवेदकों के आवेदन निरस्त हो गए थे अथवा प्रतीक्षारत हैं, वे भी पुनः आवेदन कर सकते हैं। योजनाओं से संबंधित अधिक जानकारी के लिए आवेदक मत्स्य विभाग के जनपदीय, मंडलीय एवं मत्स्य निदेशालय के कार्यालयों में किसी भी कार्य दिवस पर संपर्क कर सकते हैं।

यूपीएसआईए ने वरुण बेवरेजेज़ (पेप्सिको) की जीएम प्रेरणा कपूर को सामाजिक कार्यों के लिए किया सम्मानित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज नैनी । उत्तर प्रदेश राज्य औद्योगिक संघ (ळइएर्ईं) के पर्यावरण संरक्षण एवं अन्य जनहित के कार्यों में संयुक्त रूप से सहयोग करने पर बल दिया।

प्रतिनिधिमंडल ने वरुण बेवरेजेज़ (पेप्सिको) उद्योग का दौरा कर कंपनी की जनरल मैनेजर प्रेरणा कपूर को उनके द्वारा किए जा रहे यूपीएसआईए की ओर से अध्यक्ष अरविंद राय, के. खान, मनीष शुक्ला, नीरज श्रीवास्तव एवं डॉ. पुनीत अरोड़ा उपस्थित रहे। इस

सामाजिक कार्यों एवं समाज सेवा में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया।इस अवसर पर यूपीएसआईए के प्रतिनिधियों और कंपनी प्रबंधन के बीच भविष्य में समाज हित में किए जाने वाले विभिन्न सामाजिक एवं जनकल्याणकारी कार्यों को लेकर विस्तृत चर्चा भी हुई। प्रतिनिधिमंडल ने उद्योगों और सामाजिक संस्थाओं के बीच समन्वय बढ़ाकर शिक्षा, स्वास्थ्य, दौरान यूपीएसआईए अध्यक्ष अरविंद राय एवं उनकी टीम ने प्रेरणा कपूर को प्रशस्ति-पत्र (Certificate of Appreciation) प्रदान कर सम्मानित किया, जबकि मीडिया प्रभारी डॉ. पुनीत अरोड़ा ने उन्हें स्मृति-चिह्न (मोमेंटो) भेंट किया। कार्यक्रम सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ तथा सभी उपस्थित सदस्यों ने समाज सेवा के क्षेत्र में भविष्य में भी मिलकर कार्य करने का संकल्प व्यक्त किया।

श्रावण मास आज से प्रारम्भ हुआ जो 28 अगस्त तक चलेगा जिसके मद्देनज़र बड़ी बस/कामर्शियल वाहनों का डायवर्जन इस प्रकार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। वर्ष 2026 श्रावण मास दिनांकः 30.07.2026 से प्रारम्भ हुआ है। जो दिनांकः 28.08.2026 तक चलेगा। काँवड़ यात्रा के दौरान बड़ी बस / कामर्शियल वाहनों का

डायवर्जन निम्न प्रकार से किया जायेगा। जीटी जवाहर अलोपीबाग चुंगी से वाराणसी मार्ग पर भीटी प्रयागराज सीमा तक बांये लेन पर वाहनों का दिनांकः 30.07.2026 से 28.08.2026 तक पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा, आवागमन हेतु दाहिनें लेन का प्रयोग होगा। दिनांकः 03 अगस्त 2026 (प्रथम सोमवार हेतु) किया जाने वाला रुट डायवर्जन दिनांकः 01 अगस्त शनिवार की रात्रि 22.00 बजे से आरम्भ होकर दिनांक 04 अगस्त मंगलवार को रात्रि 22.00 बजे तक रहेगा) अन्तर्जनपदीय डायवर्जनः-1 - कानपुर की ओर से वाराणसी को जाने वाले भारी वाहन का डायवर्जन कानपुर-रामादेवी जार्जमऊ शहीद चन्द्रशेखर आजाद मार्ग-बदरका अचलगंज- बीघापुर रायबरेली-प्रतापगढ़-जौनपुर व वाराणसी के तरफ जायेंगे तथा वापसी का मार्ग भी यही होगा। 2 - कौशाम्बी की तरफ से आने वाले वाहन प्रयागराज बाईपास से सोरॉव कट से उतरकर भुपिया मऊ (प्रतापगढ़) मुंगरा बादशाहपुर, मछली शहर के रास्ते वाराणसी जायेंगे तथा वापसी का मार्ग भी यही होगा। 3-लखनऊ की ओर से वाराणसी जाने वाले भारा/ कामर्शियल वाहन रायबरेली, सलोन, प्रतापगढ़, जौनपुर के रास्ते वाराणसी जायेंगे तथा वापसी का मार्ग भी यही होगा। 4 - प्रतापगढ़ की ओर से वाराणसी जाने वाले वाहन प्रतापगढ़, मछली शहर जौनपुर के रास्ते वाराणसी जायेंगे तथा वापसी का मार्ग भी यही होगा। 5-रीवां की ओर से वाराणसी जाने वाले वाहन मनगवां, हनुमना से मिर्जापुर के रास्ते वाराणसी जायेंगे। 6- रीवां से लखनऊ कानपुर जाने वाले वाहन चित्रकूट, बांदा, चौडगरा, फतेहपुर होकर अपने गन्तव्य को जायेंगे तथा वापसी का मार्ग भी यही होगा। 7- चित्रकूट की तरफ से आने वाले वाहन राजापुर, कौशाम्बी, कोखराज होकर अपने गन्तव्य को जायेंगे। 8-शहर में लोड. अनलोड वाले वाहन कोखराज बाईपास से थाना पुरामुफ्ती होते हुये धूमनगंज मार्ग से प्रवेश करेंगे। 9-वाराणसी के तरफ से आने वाली रोडवेज बसें हण्डिया, सहसो, फाफामऊ से प्रयागराज में प्रवेश करेंगी। (शास्त्री ब्रिज का प्रयोग पूर्णतया प्रतिबन्धित रहेगा) 10- जौनपुर के तरफ से आने वाली रोडवेज बसें फूलपुर, सहसो, फाफामऊ से प्रयागराज में प्रवेश करेंगी। (शास्त्री ब्रिज का प्रयोग पूर्णतया प्रतिबन्धित रहेगा) 11-उपरोक्त अवधि में सभी भारी कामर्शियल वाहनों (आवश्यक सेवाओं के अतिरिक्त) की नो-इन्ट्री रहेगी। उक्त अवधि में सभी प्रकार के वाहन पास निरस्त रहेंगे।

वाराणसी मंडल में ट्रेनों की सघन टिकट जांच,अभियान में बिना टिकट 53 यात्री पकड़े गए
रेलवे ने यात्रियों से वसूला रु44,665 हजार का जुर्माना

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) वाराणसी। बिना टिकट एवं अनियमित यात्रा पर प्रभावी अंकुश लगाने के उद्देश्य से वाराणसी मंडल में रेलवे प्रशासन द्वारा सघन टिकट जांच अभियान लगातार चलाया जा रहा हैं। मंडल रेल प्रबंधक आशीष जैन के निर्देशन एवं वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक प्रशस्ति श्रीवास्तव के नेतृत्व में यह अभियान यात्रियों

को वैध टिकट लेकर यात्रा करने के लिए जागरूक करने के साथ-साथ रेलवे राजस्व की सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में प्रभावी साबित हो रहा हैं। इसी क्रम में मंगलवार, 28 जुलाई 2026 को सीवान स्टेशन को आधार बनाकर छपरा-गोरखपुर तथा सीवान-पंचदेवरी रेलखंड पर संचालित विभिन्न ट्रेनों में विशेष मजिस्ट्रेट टिकट जांच अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान गाड़ी संख्या 75204 पंचदेवरी-सोनपुर सवारी गाड़ी, 55102 मऊ-छपरा सवारी गाड़ी, 55105 छपरा कचहरी-थावे सवारी गाड़ी, 75103 छपरा-थावे सवारी गाड़ी, 15028 मौर्या एक्सप्रेस तथा 15708 आम्रपाली एक्सप्रेस सहित कई मेल एवं सवारी गाड़ियों में यात्रियों के टिकटों की गहन जांच की गई। यह संयुक्त अभियान सीवान के मजिस्ट्रेट सुधांशु शेखर के नेतृत्व में संपन्न हुआ। अभियान में मुख्य टिकट निरीक्षक वी.के. तिवारी के साथ वाराणसी मंडल की रेड टीम के 13 टिकट जांच कर्मियों तथा रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) के 7 जवानों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। सघन जांच के दौरान 53 बिना टिकट यात्रियों को पकड़ा गया। इन यात्रियों से रेलवे अधिनियम के तहत कार्रवाई करते हुए रु44,665 रेल राजस्व के रूप में वसूल किए गए। अधिकारियों के अनुसार इस तरह के अभियान आगे भी नियमित रूप से जारी रहेंगे, ताकि बिना टिकट यात्रा पर प्रभावी नियंत्रण रखा जा सके। अभियान का असर संबंधित रेलवे स्टेशनों पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। टिकट काउंटरों पर यात्रा टिकट लेने के लिए यात्रियों की लंबी कतारें देखने को मिलीं, जिससे यह संकेत मिला कि लोगों में वैध टिकट लेकर यात्रा करने के प्रति जागरूकता बढ़ रही हैं। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक प्रशस्ति श्रीवास्तव ने यात्रियों से अपील की कि वे हमेशा वैध यात्रा टिकट लेकर ही सफर करें, रेलवे नियमों का पालन करें तथा ट्रेनों और रेलवे परिसरों में स्वच्छता बनाए रखने में रेलवे प्रशासन का सहयोग दें। इस संबंध में मुख्य प्रचार निरीक्षक हिमांशु राव ने मीडिया को जानकारी देते हुए बताया कि यात्रियों की सुविधा, राजस्व संरक्षण एवं नियमों के प्रभावी अनुपालन के लिए वाराणसी मंडल में इस प्रकार के सघन टिकट जांच अभियान भविष्य में भी निरंतर जारी रहेंगे।

गुरु पूर्णिमा महोत्सव धूमधाम से मनाया गया

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। सर्व शक्ति साधना मंडल के तत्वावधान में प्रत्येक वर्ष की

भांति इस वर्ष भी गुरु पूर्णिमा महोत्सव श्रद्धा, भक्ति एवं उल्लास के साथ धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर परम पूज्य गुरुदेव

अनंत श्री विभूषित महामंडलेश्वर श्री श्री 1008 स्वामी पंचमानंद जी महाराज ने प्रातःकाल निखिलेश्वर स्फटिक शिवलिंग का वैदिक मंत्रोच्चार के साथ रुद्राभिषेक किया। इसके उपरांत आश्रम में विराजमान भगवान श्रीराम दरबार, मां भुवनेश्वरी, मां सरस्वती, मां लक्ष्मी, मां काली, श्री भैरवनाथ तथा अपने आराध्य देव पवनसुत हनुमान जी, जिन्हें बनखंडी सरकार के नाम से जाना जाता है, का विधि-विधान से पूजन-अर्चन किया। दोपहर में आश्रम स्थित सत्संग भवन में आयोजित गुरु पूजन कार्यक्रम में उपस्थित शिष्यों एवं भक्तों ने परम पूज्य गुरुदेव का श्रद्धापूर्वक पूजन-अर्चन किया। इस अवसर पर गुरुदेव ने अपने प्रेरणादायी आशीर्वचन प्रदान करते हुए सभी शिष्यों के सुख, शांति, समृद्धि एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना की तथा बनखंडी सरकार से सभी भक्तों के कल्याण के लिए प्रार्थना की।गुरु पूजन का मुख्य सौभाग्य श्री राजेंद्र सिंह ठेकेदार तथा नोएडा से पधारे श्री एस. पी. मिश्रा एवं श्रीमती विनीता मिश्रा को प्राप्त हुआ। पूजन-अर्चन के उपरांत विशाल भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें सभी श्रद्धालुओं ने महाप्रसादी ग्रहण कर धर्मलाभ प्राप्त किया। इस अवसर पर वीर पाल सिंह, देव मणि शुक्ल, वी. एन. त्यागी, सी. एल. तिवारी, प्रमोद दीक्षित, संजय पांडेय, राघवेन्द्र दूबे, रवि राघव, सियाराम, रमेश चंद्र दास, रमेश कुमार वर्मा, सत्येन्द्र प्रताप सिंह, संगम प्रसाद मिश्र, धर्मेंद्र सिंह, हंस मणि शुक्ल, अवनीश तिवारी, अनिल कुमार शर्मा, कृष्णा दूबे, देव नारायण तिवारी, रंजन गिरि, अरविंद परिहार, मनीष मिश्रा, सुशील पाल, राजेश कुमार गुप्ता, अभय पांडेय, सुरेश उपाध्याय, लाल बाबू शर्मा, अनूप सिंह, प्रमोद भारद्वाज, राज चावला, संदीप पांडेय, लक्ष्मण सिंह, नीरज शर्मा, राम निवास शर्मा, गौरव कुमार सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

योगी सरकार का बड़ा कदम-3 से 10 अगस्त तक चलेगा 'दिव्यांगजन रोजगार अभियान 3.0'

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) लखनऊ। दिव्यांगजनों को आर्थिक स्वरोजगार योजनाओं और लीड बैंक के माध्यम से ऋण व वित्तीय

रूप से सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने के लिए योगी सरकार द्वारा प्रदेश भर में 'दिव्यांगजन रोजगार अभियान 3.0' का आयोजन 3 से 10 अगस्त 2026 तक किया जा रहा हैं। प्रदेश के व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास और उद्यमशीलता राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) कपिल देव अग्रवाल ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में दिव्यांगजनों को सम्मानजनक आजीविका से जोड़ना सरकार की प्राथमिकता हैं। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन की इस विशेष पहल का उद्देश्य कौशल प्रशिक्षण प्राप्त दिव्यांगजनों सहित अन्य योग्य इच्छुक दिव्यांग युवाओं को उनकी योग्यता और कौशल के अनुसार रोजगार और स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराना हैं। अभियान के दौरान प्रदेश के सभी राजकीय आईटीआई में विशेष रोजगार गतिविधियां आयोजित की जाएंगी। दिव्यांग अभ्यर्थियों को रोजगार के साथ-साथ विभिन्न स्वरोजगार योजनाओं की जानकारी भी दी जाएगी। जिला उद्योग एवं निर्यात प्रोत्साहन केंद्र औद्योगिक इकाइयों और व्यावसायिक संस्थानों से समन्वय कर रिक्तियों की जानकारी जुटाएगा, वहीं एमएसएमई विभाग सहायता में सहयोग करेगा। जिला दिव्यांगजन सशक्तिकरण अधिकारी और जिला रोजगार सहायता अधिकारी रोजगार संगम पोर्टल पर पंजीकृत अभ्यर्थियों को रिक्तियों से जोड़ेंगे। अभियान की खास बात यह है कि पिछले दो चरणों में लाभान्वित दिव्यांगजनों का भौतिक सत्यापन भी किया जाएगा, ताकि उनकी वर्तमान स्थिति का आकलन हो सके।योगी सरकार की मंशा है कि कोई भी दिव्यांगजन रोजगार से वंचित न रहे। इसके लिए व्यापक प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। प्रत्येक जनपद में मुख्य विकास अधिकारी की अध्यक्षता में जिला स्तरीय समिति बनाई गई है, जो अभियान की निगरानी और समन्वय करेगी। 10 अगस्त तक सभी जनपदों से लाभान्वितों का विवरण शासन को भेजा जाएगा और सर्वाधिक रोजगार-स्वरोजगार उपलब्ध कराने वाले शीर्ष पांच जनपदों के जिलाधिकारियों और उनकी टीम को शासन स्तर पर प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा। इसकी तैयारियों को लेकर 30 जुलाई को मिशन निदेशक पुलकित खरे ने सभी सीडीओ और संबंधित अधिकारियों के साथ ऑनलाइन बैठक कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

उत्तर मध्य रेलवे ने मिर्जापुर-पं. दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन रेलखंड (64 आरकेएम) पर 'कवच 4.0' का सफल कमीशनिंग कर रचा नया कीर्तिमान
'कवच 4.0' विस्तार में उत्तर मध्य रेलवे ने हासिल की नई ऐतिहासिक सफलता, प्रयागराज मंडल के 636 रूट किमी नेटवर्क हुआ संचालित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। उत्तर मध्य रेलवे ने रेल संरक्षा के क्षेत्र में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए मिर्जापुर (समेत)-पंडित दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन (अपवर्जित) खंड के 64 रूट किलोमीटर पर कवच वर्ज़न 4.0 (ट्रेन कोलिजन अवॉइडेंस सिस्टम) का सफल कमीशनिंग किया है। इस उपलब्धि के साथ उत्तर मध्य रेलवे के प्रयागराज मंडल मे कमीशन किए गए नेटवर्क की कुल लंबाई बढ़कर 636 रूट किलोमीटर हो गई है। यह उपलब्धि भारतीय रेलवे के सुरक्षित, आधुनिक एवं तकनीक-आधारित रेल संचालन के लक्ष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। 'कवच' भारतीय रेलवे द्वारा विकसित स्वदेशी स्वचालित ट्रेन सुरक्षा प्रणाली (Automatic Train Protection System) है, जिसे ट्रेनों के सुरक्षित संचालन के लिए विकसित किया गया है। यह प्रणाली लाल सिग्नल पार करने (एसपीएडी) की घटनाओं को रोकने, निर्धारित गति सीमा का पालन सुनिश्चित करने, संभावित टक्करों से सुरक्षा प्रदान करने तथा लोको पायलट को वास्तविक समय में आवश्यक परिचालन संबंधी जानकारी उपलब्ध कराने का कार्य करती है। आधुनिक रेडियो संचार, माइक्रोप्रोसेसर एवं सेंसर आधारित यह प्रणाली इंजन, स्टेशन, सिग्नलिंग प्रणाली तथा ट्रैकसाइड उपकरणों के बीच निरंतर डेटा का आदान-प्रदान कर रेल संचालन को अधिक सुरक्षित और विश्वसनीय बनाती है। 'कवच' प्रणाली में ट्रैक धाम (207 रूट किमी) तथा कानपुर-प्रयागराज (छोइकर) (190 रूट किमी) पर 'कवच 4.0' प्रणाली का सफल कमीशनिंग किया जा चुका था। इन चारों खंडों में कुल

के बीच निर्धारित दूरी पर लगाए गए रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन टैग ट्रेन की सटीक स्थिति, दिशा और गति की जानकारी उपलब्ध कराते हैं। इंजन में स्थापित एंटेना इन टैगों को पढ़कर ट्रेन की वास्तविक लोकेशन का निर्धारण करते हैं। साथ ही, अल्ट्रा हाई फ्रिक्वेंसी रेडियो संचार प्रणाली के माध्यम से इंजन, स्टेशन एवं ट्रैकसाइड उपकरणों के बीच लगातार सूचनाओं का आदान-प्रदान होता रहता है। यदि चालक लाल सिग्नल पार करने का प्रयास करता है अथवा निर्धारित गति सीमा से अधिक गति से ट्रेन चलाता है, तो 'कवच' पहले दृश्य एवं श्रव्य चेतावनी देता है और आवश्यकता पड़ने पर स्वतः ब्रेक लगाकर ट्रेन की गति नियंत्रित करता है। यह प्रणाली एक ही ट्रैक पर चल रही दो ट्रेनों के बीच सुरक्षित दूरी बनाए रखने में भी सक्षम है तथा घने कोहरे या कम दृश्यता की स्थिति में भी चालक को सिग्नल एवं गति प्रतिबंधों की सटीक जानकारी उपलब्ध कराकर सुरक्षित संचालन सुनिश्चित करती है। इससे पूर्व उत्तर मध्य रेलवे में चिपयाना-टूंडला (175 रूट किमी), टूंडला-पनकी 572 रूट किलोमीटर पर 'कवच' संचालित है। अब मिर्जापुर (समेत)-पंडित दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन खंड के 64 रूट किलोमीटर के सफल कमीशनिंग के साथ चिपयाना (छोइकर) से पंडित दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन (प्रयागराज-मिर्जापुर को छोइ कर) तक लगभग 636 रूट किलोमीटर का निरंतर 'कवच' संरक्षित रेलखंड तैयार हो गया है।

उत्तर मध्य रेलवे में शेष स्वीकृत रेलखंडों पर भी कवच का कार्य तीव्र गति से प्रगति पर है तथा चरणबद्ध तरीके से कमीशनिंग किया जा रहा है।

इस परियोजना को महाप्रबंधक उत्तर मध्य रेलवे श्री नरेश पाल सिंह के मार्ग निर्देशन तथा प्रधान मुख्य सिग्नल एवं दूरसंचार इंजीनियर के नेतृत्व तथा सिग्नल एवं दूरसंचार विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों, प्रयागराज मंडल, परियोजना, योजना, डिजाइन, ड्रॉइंग एवं फील्ड टीमों के समर्पित प्रयासों से सफलतापूर्वक पूरा किया गया। इस परियोजना के दौरान अनेक महत्वपूर्ण तकनीकी उपलब्धियाँ भी हासिल की गईं। भारतीय रेलवे में पहली बार WAG-9 मालगाड़ी इंजन पर KERNEX निर्मित कवच का सफल कमीशनिंग किया गया। इसके साथ ही 09 इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग स्टेशनों पर कवच का सफल एकीकरण किया गया, जिनमें 07 Hitachi Electronic Interlocking तथा 02 Kyosan Electronic Interlocking स्टेशनों को प्रोटोकॉल कन्वर्टर के माध्यम से जोड़ा गया। इसके अतिरिक्त RIU (Remote Interface Unit) के माध्यम से ऑटो सेक्शन सिग्नलिंग सूचना का भी सफल एकीकरण किया गया।परियोजना के अंतर्गत आधुनिक तकनीकों का व्यापक उपयोग किया गया। संपूर्ण रेलखंड का ड्रोन, RSSI Skeb RF सर्वे किया गया तथा ट्रैक पर 1,824 RFID टैग स्थापित किए गए। बेहतर संचार व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए 03 नए 40 मीटर ऊंचे संचार टावर एवं संबंधित KAVACH अवसंरचना का निर्माण किया गया। इसके साथ ही 2 × 24-कोर बैकबोन ऑप्टिकल फाइबर केबल (OFC) बिछाई गई तथा KAVACH भवनों एवं रिले रूम का निर्माण एवं विस्तार भी किया गया। प्रणाली की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए उत्तर मध्य रेलवे, OEM प्रतिनिधियों तथा ISA Italcertifie द्वारा संयुक्त रूप से व्यापक परीक्षण किए गए। इन परीक्षणों में SPAD रोकथाम, लूप लाइन गति नियंत्रण, SOS एवं विभिन्न फेल्योर मोड, RF एवं संचार विफलता परिदृश्य, STCAS कनेक्टिविटी, RFID रीडर परीक्षण तथा मोड ट्रांजिशन एवं एक्नॉलेजमेंट का सफल सत्यापन किया गया। इसके अतिरिक्त ब्रह्मपुत्र एक्सप्रेस (15657/15658) तथा पुरुषोत्तम एक्सप्रेस (12801/12802) के माध्यम से ब्रेक आइसोलेटेड फील्ड ट्रायल भी सफलतापूर्वक संपन्न किए गए। यह उपलब्धि दिल्ली-हावड़ा उच्च घनत्व रेल कॉरिडोर पर रेल सुरक्षा को और अधिक सुदृढ़ करने, परिचालन विश्वसनीयता बढ़ाने तथा उच्च गति से ट्रेनों के सुरक्षित संचालन को सक्षम बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। उत्तर मध्य रेलवे द्वारा 'कवच' के चरणबद्ध विस्तार से भारतीय रेलवे के 'मिशन रफ्तार' तथा सुरक्षित, आधुनिक और तकनीक-आधारित रेल परिचालन के लक्ष्य को नई गति मिल रही है।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में जिला व्यापार बन्धु समिति की बैठक सम्पन्न
जिलाधिकारी ने सभी सम्बंधित विभागों के अधिकारियों को व्यापारियों की समस्याओं को शीर्ष प्राथमिकता पर निस्तारित किए जाने के दिए निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा की अध्यक्षता में

मंगलवार को संगम सभागार में जिला व्यापार बन्धु समिति की बैठक आयोजित की गयी, जिसमें प्रयागराज जनपद के व्यापार मंडलो के प्रतिनिधि एवं व्यापारीगण तथा विभिन्न विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे। बैठक में व्यापार मण्डल के प्रतिनिधियों के साथ उनकी समस्याओं एवं समाधानों पर विस्तार से चर्चा की गयी तथा व्यापारियों की समस्याओं के समयबद्ध निस्तारण हेतु सम्बंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देशित किया गया। जिलाधिकारी ने बैठक में व्यापारियों के द्वारा हैवी टैड्रफिक से जाम, साफ-सफाई, पार्किंग व्यवस्था, दुकानों के सामने अवैध अतिक्रमण को हटाये जाने सहित अन्य विषयों पर दिए गए महत्वपूर्ण सुझावों को सम्मिलित करते हुए उसके निस्तारण के सम्बंध में सभी सम्बंधित विभागों के अधिकारियों को व्यापारियों को समस्याओं को शीर्ष प्राथमिकता पर निस्तारित करने के निर्देश दिए।बैठक में द्विवेदी हॉस्पिटल-म्योर रोड टैड्रफिक चौराहा की संचालिका के द्वारा बताया गया कि अस्पताल से निकलने वाले मेडिकल वेस्ट को हटाने के लिए निर्धारित शुल्क जमा करने के बावजूद भी नगर निगम की गाड़िया कई दिनों के अंतराल पर आती है, जिससे कि मेडिकल वेस्ट को हटाने में समस्या उत्पन्न होती है, जिलाधिकारी ने नगर निगम को सभी अस्पतालों से मेडिकल वेस्ट हटाने के लिए नियमित रूप से गाड़ियों को भेजे जाने एवं मेडिकल वेस्ट को प्रतिदिन हटवाये जाने के निर्देश दिए है। व्यापारियों के द्वारा मुण्डेरा चुंगी स्थित ठण्डी बियर और अंग्रेजी शराब की दुकान को कहीं अन्यत्र स्थान पर शिफ्ट करने का अनुरोध किया गया। व्यापारियों के द्वारा बताया गया कि दुकान के पीछे शराबी बैठकर शराब पीते है तथा कई बार सड़क पर ही बैठकर पीना शुरू कर देते है, जिससे वहां पर गुटो में मारपीट की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। जिलाधिकारी ने इस सम्बंध में आबकारी विभाग एवं नगर निगम को समन्वय बनाते हुए उक्त दुकान को कहीं अन्यत्र शिफ्ट किए जाने का निर्देश दिया है। बैठक में व्यापारियों के द्वारा तहसील सोरांव में व्यापारियों से सम्बंधित शिकायतों के उठाये जाने पर जिलाधिकारी ने उपजिलाधिकारी सोरांव एवं एसीपी सोरांव को व्यापारियों के साथ बैठक करते हुए उनकी समस्याओं को प्राथमिकता पर निस्तारित किए जाने के लिए कहा है। तहसील सोरांव में पेयजल योजना के तहत कराये गये कार्यों की अपूर्णता की शिकायत पर जिलाधिकारी ने जल निगम को शिकायतों का समाधान सुनिश्चित करते हुए कार्य को शीघ्रता से पूर्ण कराये जाने का निर्देश दिया है। जिलाधिकारी ने नेशनल हाईवे पर अनाधिकृत रूप से किए गए कट को तत्काल बंद कराये जाने का निर्देश दिया है साथ ही साथ यह भी निर्देशित किया कि किसी के द्वारा यदि पुनः कट किया जाता है, तो उसके विरूद्ध तत्काल एफआईआर दर्ज कराना सुनिश्चित करें। इसके साथ ही साथ उन्होंने सभी नेशनल हाईवे पर लाइटो को ठीक कराकर क्रियाशील रखने के निर्देश दिए है। कहा कि कावंड़ यात्रा के दृष्टिगत हाईवे पर लाइटे खराब न रहे और यदि कोई लाइट खराब हो, तो उसको तत्काल ठीक कराया जाना एक नाले का गड्ढ़ा खुला होने के बारे में शिकायत किए जाने पर जिलाधिकारी ने कहा कि यदि अभी तक उसको ठीक नहीं कराया गया है, तो सम्बंधित विभाग तत्काल उसको ठीक कराना सुनिश्चित करें। बैठक में व्यापारियों के द्वारा चौक के कई मोहल्लो में जर्जर विद्युत तार होने तथा लटकने की शिकायत किए जाने पर जिलाधिकारी ने विद्युत विभाग के अधिकारियों को तत्काल जर्जर तारों को ठीक कराये जाने का निर्देश दिया है।

बैठक में व्यापारियों के द्वारा सिविल लाइन एवं पत्रिका चौराहें पर जाम की शिकायत किए जाने पर जिलाधिकारी ने सम्बंधित विभागों के अधिकारियों को आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करने के निर्देश दिए है।

इस अवसर पर जिला व्यापार बंधु समिति के सदस्य/पदाधिकारीगणों के अलावा जीएसटी विभाग के अधिकारीगणों के अलावा अन्य सम्बंधित विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

सूझबूझ इसी में कि हम पड़ोसियों के साझेदार बनें

एक प्रमुख शक्ति के रूप में भारत का उदय स्थिर और सहयोगी पड़ोस की अपेक्षा करता है। कोई भी देश अपने आस-पड़ोस के स्ट्रैटेजिक परिवेश का प्रबंधन किए बिना दुनिया में दबदबे का दावा नहीं कर सकता। 1985 में सार्क की स्थापना के पीछे का मार्ग टकराव नहीं, बल्कि सहयोग से होकर जाता है। परिणामस्वरूप एक ऐसी प्रक्रिया आरंभ हुई, जो अंततः ईयू के रूप में विकसित हुई। यह आधुनिक इतिहास में क्षेत्रीय एकीकरण के सबसे सफल उदाहरणों में से एक है।अफ्रीकी संघ का उदय उदाहरणों में एक महत्वपूर्ण तत्व साझा सांस्कृतिक और सभ्यतागत संबंधों का अस्तित्व था। यही तर्क दक्षिण एशिया पर भी समान रूप से लागू होता है। राजनीतिक मतभेदों के बावजूद दक्षिण एशिया में गहन सभ्यतागत एकता विद्यमान रही है। हमारा साझा इतिहास, संस्कृति, भाषा, साहित्य और संगीत की सदियों पुरानी विरासत मानवीय संबंधों का एक सशक्त आधार प्रदान करती है। समाधान सार्क को त्यागने में नहीं, बल्कि धैर्य और व्यावहारिकता के साथ उसे पुनर्जीवित करने में हैं। विश्वास

यही तर्क था। किंतु 2016 में पाकिस्तान-प्रायोजित आतंकवाद के कारण इस्लामाबाद में प्रस्तावित 19वें शिखर सम्मेलन के रद्द होने के बाद से यह संगठन निष्प्राण-सा हो गया है। इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं, जब देशों ने अपनी आपसी प्रतिद्वंद्विताओं को पीछे छोड़कर क्षेत्रीय सहयोग की संस्थाओं का निर्माण किया। ऐसी संस्थाएं इसलिए अस्तित्व में आईं, क्योंकि नेताओं ने यह समझ लिया था कि भूगोल एक स्थायी हकीकत है, जबकि संघर्ष महज एक विकल्प है। चुनौती यह थी कि भौगोलिक निकटता को तनाव के स्रोत से बदलकर सामूहिक तरक्की के साधन में बदला जाए। इसका सबसे उल्लेखनीय उदाहरण ईयू है। ब्रिटेन और फ्रांस सदियों तक प्रतिद्वंद्वी रहे। जर्मनी ने इन दोनों के विरुद्ध विनाशकारी युद्ध लड़े। यूरोप राष्ट्रीय पहचानों की रक्षा को लेकर अत्यधिक संवेदनशील था। फिर भी, विश्वयुद्धों की त्रासदी के बाद यूरोप ने धीरे-धीरे महसूस किया कि समृद्धि और सुरक्षा भी उन सीमाओं के बावजूद हुआ था, जिन्हें औपनिवेशिक शक्तियों ने मनमाने ढंग से निर्धारित किया था। वहां जातीय संघर्ष तथा अंतर-राज्यीय विवाद भी थे। आसियान भी ऐसे देशों को एक मंच पर लाया, जो पहले पारस्परिक अविश्वास और संघर्ष के अनुभव से गुजर चुके थे। इंडोनेशिया और मलेशिया 1960 के दशक में कोनफ्रोंतासी संघर्ष में उलझे थे। 1965 में मलेशिया से सिंगापुर का अलगाव कटु परिस्थितियों में हुआ था। थाईलैंड और कंबोडिया के बीच लंबे समय से सीमा-विवाद थे। फिर भी, आसियान एक अत्यंत प्रभावी क्षेत्रीय मंच के रूप में विकसित हुआ, क्योंकि उसके सदस्य देशों ने यह समझ लिया था कि आर्थिक विकास और सामरिक स्थिरता का सर्वोत्तम मार्ग सामूहिक प्रयासों से होकर जाता है। इसी प्रकार, अमेरिकी राष्ट्रों का संगठन (ओएएस) भी उन देशों के बीच स्थापित हुआ, जिनका इतिहास क्षेत्रीय विवादों, वैचारिक विभाजनों और राजनीतिक अस्थिरता से भरा हुआ था। इन सभी इस क्षेत्र के लोग इतिहास, भाषा, धर्म, भोजन, संस्कृति, साहित्य, संगीत और पारिवारिक-सामाजिक संबंधों के ऐसे नेटवर्कों से जुड़े हैं, जिनका अस्तित्व आधुनिक राष्ट्र-राज्यों के उदय से बहुत पहले से रहा है। लेकिन अफसोस कि सार्क की प्रगति भारत और पाकिस्तान के तनावपूर्ण संबंधों की बंधक बनकर रह गई। दशकों से चले आ रहे अविश्वास ने सामूहिक पहलों को पंगु बना दिया। चीन ने भी क्षेत्रीय विभाजनों का लाभ उठाकर अपने सामरिक हितों को आगे बढ़ाने के अवसर देखे। इसके बावजूद सार्क के पीछे निहित तर्क आज भी उतना ही प्रासंगिक है। दक्षिण एशिया के साथ भारत का संबंध केवल भौगोलिक ही नहीं, सभ्यतागत भी है। बौद्ध धर्म के माध्यम से भारत और श्रीलंका के संबंध गहरे हैं। नेपाल के भारत के साथ सांस्कृतिक और धार्मिक संबंध स्थायी हैं। बांग्लादेश भारत के साथ गहरे भाषाई, ऐतिहासिक और भावनात्मक संबंध साझा करता है। यहां तक कि पाकिस्तान के साथ भी रातों-रात निर्मित नहीं किया जा सकता। किंतु जब लोग व्यापार, पर्यटन, शैक्षिक आदान-प्रदान, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, परस्पर संपर्क, ऊर्जा सहयोग आदि के माध्यम से सहयोग के लाभों का प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं, तब वे स्वयं उस सहयोग के पैरोकार भी बन जाते हैं।

एक उभरती हुई प्रमुख शक्ति के रूप में भारत के लिए पहली प्राथमिकता अपने निकटवर्ती पड़ोस को मजबूत बनाना होना चाहिए। दक्षिण एशिया के भूगोल ने हमें पड़ोसी बनाया है।

लेकिन सूझबूझ इसी में है कि हम सहयोगी भी बनें।

भूगोल एक स्थायी हकीकत है, जबकि संघर्ष महज एक विकल्प है। ऐसे में चुनौती यह है कि भौगोलिक निकटता को तनाव के स्रोत से बदलकर सामूहिक तरक्की के साधन में बदला जाए।

इतिहास भी यही सबक सिखाता है। (ये लेखक के अपने विचार हैं,पवन के. वर्मा)

स्त्री की सुगंध!

स्त्री...जब भगवान ने स्त्री की रचना की, तो उस शुक्रवार को वे देर रात तक काम करते रहे...तब एक देवदूत ने पूछा, 'इतना समय क्यों लग रहा है?' भगवान बोले, 'उसे गढ़ने के लिए मुझे कितनी सारी शर्तें पूरी करनी पड़ती हैं, देखा है तुमने?' उसे हर परिस्थिति में काम करना आना चाहिए। वो एक साथ कई बच्चों की देखभाल कर सके। उसकी एक झप्पी घुटने के घाव से लेकर टूटे हुए दिल तक – सब ठीक कर दे। और ये सब उसे केवल दो हाथों से करना है। बीमार होने पर भी वो स्वयं को संभालती है और दिन में 18 घंटे काम कर सकती है। देवदूत हैरान हो गया, 'केवल दो हाथ? नामुमकिन!' 'और ये तो आम डिज़ाइन है?' देवदूत स्त्री के पास गया और उसे छूकर बोला, 'प्रभु, आपने इसे बहुत ही कोमल बनाया है।' भगवान ने कहा, 'वो कोमल है, पर मैंने उसे बहुत मज़बूत बनाया है। वो कितना सह सकती है और कितनी

मुश्किलों को पार कर सकती है, तुम सोच भी नहीं सकते।' देवदूत ने पूछा, 'क्या ये सोच सकती है?' भगवान बोले, 'ये केवल सोचती ही नहीं, तर्क लगाती है, निर्णय लेती है और बातचीत भी करती है।' देवदूत ने उसके गाल को छुआ...'प्रभु, यहाँ से कुछ टपक रहा है! आपने इस पर बहुत बोझ डाल दिया है।' भगवान बोले, 'वो टपक नहीं रहा... वो आँसू हैं।' 'वो किसलिए?' देवदूत ने पूछा। भगवान ने कहा, 'आँसू उसके दुःख, शंका, प्रेम, अकेलापन, दर्द और गर्व जताने का तरीका हैं।' ये सुनकर देवदूत बहुत प्रभावित हुआ। 'प्रभु, आप सचमुच अद्भुत हैं। आपने हर चीज़ का ख्याल रखा है। वो सच में एक विलक्षण स्त्री है।' भगवान बोले, 'हाँ, वो है। उसमें पुरुष को चकित कर देने की ताकत है। वो संकटों का सामना कर सकती है और भारी ज़िम्मेदारियाँ उठा सकती है। उसके पास खुशी, प्रेम और अपनी राय होती है। चिल्लाने का मन होने पर भी वो मुस्कुराती है। रोने का मन होने पर भी वो गाती है, खुशी में रोती है और डर लगने पर भी हँसती है। जिस बात पर उसे यकीन है, उसके लिए लड़ती है। उसका प्रेम निःस्वार्थ होता है रिश्तेदार या मित्र के जाने पर उसका दिल टूटता है, पर फिर भी वो जीने की ताकत ढूंढ लेती है।' देवदूत ने पूछा, 'तो क्या वो परिपूर्ण है?' भगवान बोले, 'नहीं... उसमें केवल एक कमी है – वो अक्सर अपनी कीमत भूल जाती है।' स्त्री होना अनमोल है।

हैकिंग को रूटीन बना देना एआई की 'बुद्धिमत्ता' नहीं कहला सकती

एआई कम्पनी एंथ्रोपिक ने हाल ही में अपने लार्ज लैंग्वेज मॉडल की नवीनतम सेवा क्लॉड माइथोस प्रिव्यू को जारी किया, लेकिन यह केवल 40 बड़ी टेक-कंपनियों के सीमित समूह के लिए होगा। यह हैं। यह कोई पब्लिसिटी-स्टंट नहीं है। इस घोषणा से पहले, प्रमुख टेक-कंपनियों के प्रतिनिधि ट्रम्प प्रशासन के साथ निजी तौर पर इस बात पर चर्चा कर रहे थे कि इसका उन देशों की सुरक्षा पर स्तर कुछ भी हो- को सॉफ्टवेयर कोड लिखने में असाधारण रूप से सक्षम बना रहा है। लेकिन बताया जाता है कि स्वयं एंथ्रोपिक ने भी यह अनुमान नहीं लगाया था कि यह इतनी जल्दी, इतनी दक्षता के

नया मॉडल परफॉर्मेंस में बुनियादी बदलावों का दावा करता है, जिसके साइबर और राष्ट्रीय सुरक्षा पर गहरे प्रभाव हो सकते हैं। क्लॉड माइथोस के डेवलपमेंट के दौरान एंथ्रोपिक ने पाया कि यह न केवल किसी भी मॉडल की तुलना में अधिक जटिलता और आसानी से सॉफ्टवेयर कोड लिख सकता है, बल्कि अपनी इस क्षमता के चलते यह दुनिया के लगभग सभी प्रमुख सॉफ्टवेयर सिस्टमों में व्याप्त कमजोरियों को भी पहले की तुलना में अधिक आसानी से खोज सकता है। लेकिन अगर यह टूल गलत हाथों में चला गया, तो वे दुनिया के लगभग हर प्रमुख सॉफ्टवेयर सिस्टम- यहां तक कि इस समूह में शामिल कंपनियों द्वारा बनाए सिस्टमों को भी हैक कर सकते क्या प्रभाव पड़ेगा, जो इन असुरक्षित सॉफ्टवेयर प्रणालियों का उपयोग करते हैं। एंथ्रोपिक ने अपने एक लिखित बयान में कहा कि पिछले केवल एक महीने में ही माइथोस प्रिव्यू ने हजारों गंभीर कमजोरियों की पहचान की है। ये हर प्रमुख ऑपरेटिंग सिस्टम और वेब ब्राउजर में शामिल हैं। एआई जिस तेजी से बढ़ रहा है, उसके मद्देनजर ऐसी क्षमताओं का व्यापक होना अब दूर नहीं है। और संभव है कि वे उन पक्षों से भी आगे फैल जाएं, जो इन्हें सुरक्षित रूप से उपयोग करने की बात करते हैं।सुपर-इंटेलिजेंट एआई अपेक्षा से कहीं तेजी से सामने आ रहा है। यह तो पहले से स्पष्ट था कि एआई किसी भी व्यक्ति- चाहे उसकी कम्प्यूटर साक्षरता का साथ, मौजूदा कोड में खामियों को खोजने और उनका दोहन करने के तरीकों को पहचानने में सक्षम हो जाएगा। क्लॉड माइथोस ने हर प्रमुख ऑपरेटिंग सिस्टम और वेब ब्राउजर में गंभीर कमजोरियों की पहचान की है- ये ऐसे सिस्टम हैं, जिन पर दुनिया भर में बिजली ग्रिड, जल आपूर्ति तंत्र, एयरलाइन आरक्षण प्रणालियां, रीटेलिंग नेटवर्क, सैन्य प्रणालियां और अस्पताल निर्भर हैं।

यदि यह टूल व्यापक रूप से उपलब्ध हो जाता है, तो इसका अर्थ होगा कि किसी भी प्रमुख बुनियादी ढांचे की प्रणाली को हैक करने की क्षमता- जो पहले केवल निजी क्षेत्र के विशेषज्ञों और खुफिया एजेंसियों तक सीमित ?थी और जो एक कठिन और महंगा कार्य था- अब हर आपराधिक तत्व, आतंकी संगठन, देश के लिए सुलभ हो सकती है। इस समस्या का समाधान दुनिया का कोई भी देश अकेले नहीं कर सकता। शुरुआत दो एआई महाशक्तियों- अमेरिका और चीन को करनी होगी। यह बहुत जरूरी हो गया है कि वे आपस में सहयोग करना सीखें, ताकि बुरी ताकतें इस साइबर क्षमता तक पहुंच न बना सकें।

यह उतना ही बुनियादी महत्व का है, जितना एटमी हथियारों के बाद परमाणु अप्रसार संधियां थीं। जटिल साइबर हैकिंग अभियानों को विकसित करने की जो क्षमता पहले बड़े देशों, सेनाओं, कंपनियों और बड़े बजट वाले आपराधिक संगठनों तक सीमित थी, वह अब छोटे समूहों को भी उपलब्ध हो सकती है।

ऐसे में यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि वे केवल जिम्मेदार हाथों तक ही सीमित रहें। (द न्यूयॉर्क टाइम्स से,थॉमस एल. फ्रीडमैन)

कला को पनपना है तो अमीरों को सहायता और शिक्षितों को प्रोत्साहन देना चाहिए

आईपीएल पूरा होने की वजह से लंबे समय बाद किसी रविवार की शाम मुझे लगा कि मेरे पास करने के लिए कुछ नहीं था। परिवार ने एकाएक तय किया कि मुंबई के बांद्रा स्थित नीता मुकेश अंबानी कल्चरल सेंटर होने वाला था कि 'आप यहां कैसे?' फिर लगा कि किसी वरिष्ठजन से ऐसा सवाल पूछना कितना मूर्खतापूर्ण होता। वे 73 वर्षीय अनंग देसाई थे, जिन्हें कल्ट-क्लासिक सिटकॉम 'खिचड़ी' में चिड़चिड़े लेकिन थे, जिनवेव दौर में व्यापक सांस्कृतिक, शैक्षणिक और वैज्ञानिक पुनर्जागरण हुआ था। उनका दरबार उत्कृष्ट संगीतकारों, रचनाकारों और उन नडुवनारों को एक मंच पर लाया, जो मंजीरे बजा कर लयबद्ध बोलों वर्ल्ड क्लास थिएटर में वैश्विक मानकों की साउंड, लाइटिंग और मंच सज्जा हो। यह निश्चित ही विचारणीय है। 90 मिनट के कार्यक्रम के बाद मेरा मन दो वर्गों के प्रति कृतज्ञता से भर गया। पहले, वे समृद्ध लोग

(एनएमएसीसी) चलें। वहां हम पारंपरिक भरतनाट्यम नृत्य शो 'इकोज ऑफ तंजावुर- द अनब्रोकन' देखने पहुंचे। 125 सीटों वाले छोटे किन्तु पूरे भर चुके एक्सपेरिमेंटल थिएटर में मेरी नजर एक परिचित चेहरे पर पड़ी। मेरी तथाकथित इंटेलिजेंस तुरंत सक्रिय हुई, सवाल उठाया कि 'ये यहां कैसे? इनका तो इस कार्यक्रम से कोई संबंध नहीं है।' मैंने अंदाजा लगाया कि उनकी उम्र इस छोटे ऑडिटोरियम की कुल बैठक क्षमता की लगभग आधी होगी। फिर भी, वे पूरी तरह से उस शास्त्रीय नृत्य कला में खोए थे, जो तंजावुर जिले की विरासत है। इसी स्थान से मैं भी आता हूं। उसी क्षण मेरे दिमाग ने मुझे सोमवार के लेख का विषय दे दिया। दिमाग ने शो खत्म होते ही उनका इंटरव्यू लेने का निर्देश दिया। मेरा योजनाबद्ध और उत्सुकता भरा पहला सवाल यही सबके चहेते परिवार के मुखिया 'बाबूजी' (तुलसीदास पारेख) के किरदार के लिए जाना जाता है। 100 से अधिक टीवी शो और 70 फिल्मों के करियर वाले देसाई का पालन-पोषण अहमदाबाद में हुआ। उनके पिता कार्डियोलॉजिस्ट और मां सिंगर व पेंटर थीं। अपनी कला को नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा तथा फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया में निखारने के कारण उनकी कलात्मक समझ बेहद गहरी है। बात की तो वे मुस्कराए और बोले, 'कला तो कला है। मुझे हर रूप में कला से प्रेम है।' वे इससे ज्यादा सही नहीं हो सकते थे। जो परफॉर्मेंस हमने देखी, वो तंजावुर क्वार्टेट से उपजी है। प्रिया मुरले, लेखा प्रसाद और स्नेहा महेश विशाल द्वारा प्रस्तुत यह नृत्य कला सर्फोजी-द्वितीय (1777-1832) के राजदरबार में विकसित हुई थी। सर्फोजी-द्वितीय तंजावुर के दूरदर्शी मराठा शासक के जरिए नर्तकों का मार्गदर्शन करते थे। कार्यक्रम की खूबसूरती कई अप्रत्याशित रूपों में सामने आई। प्रिया ने पैरों से नृत्य नहीं किया, बल्कि आंखों की अभिव्यक्ति से पूरी कहानी बताई। बेहद खूबसूरती से भगवान कृष्ण और कुचेला (सुदामा) की निःस्वार्थ मित्रता और दिव्यता जीवंत की। मैंने उनसे जाकर कहा, 'वाह, आज एहसास हुआ कि कोई सिर्फ आंखों से भी पूरी कहानी कह सकता है।' इसे भरतनाट्यम की भाषा में 'अभिनयम' कहते हैं। वहीं, लेखा और स्नेहा ने भगवान शिव की स्तुति में 'कीर्तनम' प्रस्तुत किया और उनकी जटिल, ब्रह्मांडीय मुद्राओं को अद्भुत सौंदर्य के साथ साकार किया। उस शाम मुझे एहसास हुआ कि ऐसे हेरिटेज आर्ट फॉर्म्स को मुख्यधारा का ऐसा मंच देना कितना मूल्यवान होता है, जहां जिन्होंने ऐसा ठिकाना बनाया और उभरती प्रतिभाओं के लिए इसे खोला, ताकि संस्कृति फल-फूल सके। दूसरे, वे बुद्धिमान दर्शक जिन्होंने हर सीट भर दी, कला को समझा और सही समय पर तालियां बजाईं। इससे कलाकारों को लगा कि वे ऐसे दर्शकों के सामने प्रस्तुति दे रहे हैं, जो कला की बारीकियों को अच्छे-से समझते हैं। अनंग देसाई इस दूसरे वर्ग का एक शानदार उदाहरण थे। फंडा यह है कि कला की एक यूनिवर्सल भाषा होती है, जो हर भाषाई सीमा के परे है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक हमारी समृद्ध विरासत को सच में सुरक्षित रखना है तो अमीरों को आर्थिक सहायता देकर ऐसे ठिकाने मुहैया कराने होंगे, जहां संस्कृति फल-फूल सके और शिक्षित लोगों को उसे जिंदा रखने के लिए बौद्धिक सराहना देनी होगी।एन. रघुरामन

शहरों का दिल कभी गांवों के जैसा नहीं हो सकता

'नानी, मैं स्कूल जा रहा हूं!' मैं दरवाजे से चिल्लाकर कहता था और हर सुबह, उनकी तेज लेकिन प्यार से भरी हुई आवाज लौटकर आती थी : 'कितनी बार समझाऊं? ऐसा कभी नहीं कहते हैं कि मैं जा रहा हूं, कहो कि मैं स्कूल जाकर आता हूं।' मैं उनकी ओर देखे बिना मन ही मन में कभी नहीं बुदबुदाता कि 'क्या फर्क पड़ता है?' और मैं वही दोहरा देता जो उन्होंने कहा था और भाग जाता। वे दो शब्द- 'आता हूं'- सुरक्षा और आश्वासन का एक अलिखित अनुबंध थे, जिस पर हमारे बुजुर्ग भरोसा करते थे। उन्हें से पानी निकालकर मिट्टी धो देते और कक्षा के फर्श पर आलथी-पालथी मारकर बैठ जाते। उस जमाने में हमें सबसे बड़ी निशानी क्या थी? ट्यूशन जाना।1960 के दशक में अतिरिक्त कक्षाओं का मतलब यह था कि आप

दरवाजे पर खड़े होकर वेव करने या चुंबन उछालने की जरूरत नहीं होती थी। वे हमें जाते हुए बेचैन आंखों से नहीं देखते थे। ये वो दिन थे जब हमारे पास कुछ भी नहीं था और इसके बावजूद हमारे पास किसी चीज की कमी नहीं थी। वे हमें नंगे पांव और खुले दिल से दुनिया में जाने देते थे, इस विश्वास के साथ कि गांव हमें सकुशल लौटा लाएगा। अगर हमारे पैर कीचड़ से भर जाते, तो हम रोते नहीं थे; बस सड़क किनारे लगे हैंडपंप रिपोर्ट कार्ड की भी कोई चिंता नहीं होती थी। केवल पास या फेल मायने रखता था। तब किसी बुजुर्ग से डांट खाना रोजमर्रा की बात थी, इससे किसी को कोई मनोवैज्ञानिक आघात नहीं लगता था। अगर शरारत करने पर कोई बिल्कुल अनजान व्यक्ति हमारे कान उमेठ देता था, तो हम वकील तलाशने नहीं निकलते थे- हम उसे स्वीकार कर लेते थे। गांव सोशल-पैरेंटिंग की परंपरा निभाता था। हम सभी के थे। तब हमारे लिए शर्म की पहली बार में किसी बात को समझने के लिए पर्याप्त होशियार नहीं हैं। और हमारी सबसे बड़ी विलासिता क्या थी? साइकिल की आगे वाली रॉड या जंग लगे कैरियर पर बैठकर धूल भरी पगडंडियों पर तेजी से चलते चले जाना और फल तोड़ने के लिए साइकिल को किसी सीढ़ी की तरह इस्तेमाल करना। तब हमें ऐसा लगता था जैसे हमने पूरी दुनिया जीत ली हो। वो ऐसे दिन थे, जब अव्वल दर्जे की उम्मीदें सेकंड-हैंड किताबों में रहती थीं। हम किताबों के पन्नों के बीच मोरपंख और पीपल के सूखे पत्ते दबाकर रखते थे, यह भोला विश्वास करते हुए कि इससे हम बुद्धिमान बन जाएंगे। उन नाजुक, कंकाल जैसे दिखने वाले पत्तों- जो फाइन-आर्ट की तरह लगते थे- में निहित हमारा यह विश्वास हमें वह चीज देता था, जो शहर शायद ही कभी दे पाते हैं- शुद्ध और बिना कोई मिलावट वाली उम्मीद। उस समय हर पाठ्यपुस्तक पर भूरे रंग के कवर चढ़ाए जाते थे और उन्हें कपड़े से बने झोलों में करीने से रखा जाता था, क्योंकि वे केवल हमारी नहीं थीं- उन्हें अगले साल 'थर्ड-हैंड' किताबों के रूप में बेचे जाने के लिए भी सहेज रखना होता था। आठवीं कक्षा तक मैंने सेकंड-हैंड किताबों से ही पढ़ाई की थी, जब तक कि उसके बाद पाठ्यक्रम नहीं बदल गया। फिर भी हमारे माता-पिता ने कभी पढ़ाई के बोझ की शिकायत नहीं की।

जीवन सीमित साधनों वाला जरूर था, लेकिन उसमें हमें कभी ऐसा महसूस नहीं हुआ कि हम गरीब हैं। दक्षिण भारत के 'मंदिरों का शहर' कहलाने वाले कुम्भकोणम में- जहां मैंने प्राथमिक शिक्षा के वर्षों में अपना बचपन बिताया- संस्कृति किसी पाठ्यपुस्तक में नहीं सिखाई जाती थी; वह मिट्टी में ही रची-बसी थी। हर गली-मोहल्ले में मंदिर होने के कारण सड़कें स्वयं पवित्र लगती थीं।

थाईलैंड में 3 इंडियन टूरिस्ट का अपहरण, 5 भारतीय गिरफ्तार,पाकिस्तानी के कहने पर किडनैपिंग की

सस्ते टूर पैकेज का लालच देकर पटाया बुलाया

बैंकॉक। थाईलैंड में तीन भारतीय पर्यटकों का अपहरण करके उनके परिवारों से फिरौती मांगने का मामला सामने आया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, से पहले भी एक भारतीय को उसी घर में बंधक बनाया गया था। उसे तब छोड़ा गया जब उसके परिजनों ने करीब 30 लाख रुपये की फिरौती चुका दी थी। पुलिस अब

पुलिस ने इस मामले में पांच भारतीय नागरिकों को गिरफ्तार किया है। पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि उन्हें एक पाकिस्तानी नागरिक ने तीनों को किडनैप करने को कहा था। पुलिस ने तीनों लड़कों को रेस्क्यू कर लिया है। पीड़ितों की पहचान मोहित (23), आशीष (24) और हिमांशु (20) के रूप में हुई है। आरोपियों ने उन्हें सस्ते 7 दिन के टूर पैकेज का लालच देकर मामले के मुख्य सूत्रधार और अन्य पाकिस्तानी संदिग्धों की तलाश कर रही है। पुलिस ने बताया कि आरोपियों को इस काम के बदले नकदी, कीमती सामान और थाईलैंड से बाहर जाने के लिए एयरलाइन टिकट का वादा किया गया था। थाईलैंड भारतीय अपराधियों का अड्डा क्यों बन रहा है? 1. आसान एंट्री और वीजा छूटः थाईलैंड में भारतीय पर्यटकों

थाईलैंड के पटाया शहर बुलाया था। वहां पहुंचने के बाद उन्हें एक घर में बंधक बना लिया गया और उनके परिवारों से तीनों के बदले 40-40 लाख रुपए, यानी कुल 1.20 करोड़ रुपए की फिरौती मांगी गई। दुबई से निर्देश दे रहा था पाकिस्तानी मास्टरमाइंड- पुलिस के मुताबिक, गिरफ्तार आरोपियों की पहचान अवतार सिंह (38), जगजीत सिंह (38), रंभालक कुमार (24), सुखबीर सिंह (37) और कुलरा सिंह (27) के रूप में हुई है। पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि वे पिछले एक महीने से चैट एप्लीकेशन के जरिए दुबई में बैठे एक पाकिस्तानी नागरिक के संपर्क में थे। उसी ने अपहरण की पूरी साजिश रची थी। फिरौती की रकम क्रिप्टोकरेंसी के जरिए लेने की योजना बनाई गई थी। इसके बदले आरोपियों को नकदी, कीमती सामान और थाईलैंड से बाहर जाने के लिए एयरलाइन टिकट देने का वादा किया गया था। पीड़ितों ने पुलिस को बताया कि उन्हें कई दिनों तक भूखा रखा गया। उनके हाथ-पैर बांध दिए गए और उल्टा लटकाकर बेरहमी से पीटा गया। खून जैसा दिखाने के लिए शरीर पर लाल स्प्रे पेंट लगाया-आरोपियों ने पीड़ितों के शरीर पर लाल स्प्रे पेंट लगाया, ताकि वीडियो कॉल के दौरान ऐसा लगे कि उन्हें गंभीर चोटें आई हैं और उनके शरीर से खून बह रहा है। इन वीडियो के जरिए परिवारों पर फिरौती देने का दबाव बनाया जा रहा था। पीड़ितों के परिजनों ने भारतीय दूतावास से संपर्क किया। इसके बाद 21 जुलाई को दूतावास ने चोनबुरी इमिग्रेशन पुलिस और पटाया पुलिस को अलर्ट किया। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज और खुफिया जानकारी के आधार पर पटाया के एक टाउनहाउस में छापा मारा। वहां तीनों पीड़ित अलग-अलग कमरों में बंधे हुए मिले। उनके मुंह पर टेप लगा था और शरीर पर चोट के निशान थे। पुलिस को मौके से टेप, लकड़ी का डंडा और लाल स्प्रे पेंट बरामद हुआ है। पहले भी एक टूरिस्ट को किडनैप किया गया था-रेस्क्यू किए गए पीड़ितों ने पुलिस को बताया कि उनके आने के लिए वीजा-ऑन-अराइवल की सुविधा है। अपराधी आसानी से फर्जी पासपोर्ट या टूरिस्ट वीजा पर वहां पहुंच जाते हैं। 2. बॉर्डर और साइबर स्कैम हबः थाईलैंड की सीमा म्यांमार और कंबोडिया से लगती है। म्यांमार बॉर्डर पर चीनी और लोकल माफिया के बड़े-बड़े साइबर स्कैम सेंटर चल रहे हैं। यहाँ फर्जी नौकरी और कॉल सेंटर फ्रॉड का बड़ा नेटवर्क है। 3. पहचान छिपाना बेहद आसानः थाईलैंड में हर साल करोड़ों विदेशी टूरिस्ट आते हैं। इस भारी भीड़ में खुद को टूरिस्ट बताकर छिपना आसान हो जाता है। 4. अंतरराष्ट्रीय क्रिमिनल नेटवर्कः भारतीय अपराधी वहां जाकर चीनी, पाकिस्तानी या लोकल गेंगस्टर के साथ हाथ मिला लेते हैं और क्रिप्टोकरेंसी व दुबई जैसे लोकेशन से क्रिप्टो ट्रांजेक्शन के जरिए रंगदारी वसूलते हैं। 5. सस्ते टूर के नाम पर जालसाजीः हाल के दिनों में भारत के ही कुछ अपराधी गैंग सस्ते टूर पैकेज का झांसा देकर भारतीयों को थाईलैंड बुलाते हैं और फिर उन्हें बंधक बनाकर उनके परिजनों से रंगदारी वसूलते हैं। अपराधी पीड़ितों से क्रिप्टोकरेंसी में फिरौती क्यों मांगते हैं-छद्म नाम और पहचान का न होना- बैंक अकाउंट खोलने के लिए आधार, पैन या पासपोर्ट की जरूरत होती है, जिससे पुलिस मिनटों में अपराधी तक पहुंच सकती है।

लेकिन क्रिप्टो वॉलेट बनाने के लिए किसी आईडी या नाम की जरूरत नहीं होती।यह केवल एक 32-अक्षर के रैंडम कोड जैसा दिखता है, जिससे वॉलेट के असली मालिक का नाम पता लगाना लगभग नामुमकिन होता है। किसी बैंक से कनेक्शन नहीं- बैंक ट्रांसफर में रिजर्व बैंक या कोई बैंक अथॉरिटी संदिग्ध लेनदेन को रोक सकती है या पुलिस के कहने पर खाते फ्रीज कर सकती है।क्रिप्टो में ऐसा कोई कंट्रोलर नहीं होता। अगर एक बार क्रिप्टो किसी वॉलेट में ट्रांसफर हो गया, तो दुनिया की कोई भी सरकार उस ट्रांजेक्शन को रोक या वापस नहीं करा सकती।

राजा मर्डर केस- सोनम रघुवंशी फिर गई जेल, शिलॉन्ग कोर्ट में सरेंडर

सुप्रीम कोर्ट बोला था- तकनीकी खामी के आधार पर जमानत देना सही नहीं

इंदौर। इंदौर के ट्रांसपोर्ट कारोबारी राजा रघुवंशी हत्याकांड

में मुख्य आरोपी सोनम रघुवंशी ने बुधवार को मेघालय के शिलॉन्ग कोर्ट में सरेंडर कर दिया। उसे जेल भेज दिया गया। सुप्रीम कोर्ट ने 23 जुलाई को सोनम की जमानत रद्द करते हुए उसे तीन हफ्ते के भीतर संबंधित अदालत में सरेंडर करने का निर्देश दिया था। ये अवधि पूरी होने से पहले ही सोनम सरेंडर करने कोर्ट पहुंच गई। सोनम के सरेंडर पर राजा के भाई विपिन रघुवंशी ने कहा- मैं मेघालय सरकार को धन्यवाद देता हूं। उनकी वजह से आज हमें न्याय मिलने की उम्मीद जगी है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा था- जमानत देकर गलती की- इससे पहले 23 जुलाई को सुप्रीम कोर्ट ने सोनम को तीन हफ्ते में सरेंडर करने का आदेश दिया था। कोर्ट ने कहा था- हाईकोर्ट और ट्रायल कोर्ट ने गिरफ्तारी के आधारों की जानकारी दिए जाने में कथित खामियों के आधार पर जमानत देकर गलती की थी। इसके साथ ही कोर्ट ने पुलिस को निर्देश दिया था कि मामले का ट्रायल 6 महीने के भीतर पूरा किया जाए। कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया था कि अगर तय अवधि में ट्रायल पूरा नहीं होता है तो सोनम रघुवंशी दोबारा जमानत के लिए आवेदन कर सकती है। गिरफ्तारी के आधार बताए गए थे, इसलिए जमानत गलत- सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि संविधान के अनुच्छेद 22(1) के तहत गिरफ्तारी के आधार की जानकारी देना अनिवार्य है, लेकिन इस मामले में गिरफ्तारी के आधार बताने में पूरी तरह नाकामी नहीं हुई थी।

कोर्ट के अनुसार, गिरफ्तारी के आधार बिल्कुल न बताना और उनमें कुछ जानकारियों का अपर्याप्त होना, दोनों अलग-अलग स्थितियां हैं। इसलिए केवल तकनीकी कमी के आधार पर जमानत देना उचित नहीं था। जमानत पर बाहर रहना ट्रायल को प्रभावित कर सकता है-कोर्ट ने यह भी कहा था कि सोनम ने मजिस्ट्रेट के सामने गिरफ्तारी के आधार और संबंधित दस्तावेज मिलने की पुष्टि की थी।

यदि गिरफ्तारी की प्रक्रिया में कोई कमी भी हो, तब भी जांच एजेंसी जरूरत पड़ने पर दोबारा गिरफ्तारी कर सकती है।

जस्टिस एमएम सुंदरेशन और जस्टिस पीबी वरेले की बेंच ने कहा था कि मेरिट के आधार पर सोनम की जमानत याचिकाएं पहले ही खारिज हो चुकी हैं और मुकदमे की सुनवाई शुरू हो गई है। ऐसे में इस चरण पर आरोपी का जमानत पर बाहर रहना ट्रायल को प्रभावित कर सकता है। इन्हीं टिप्पणियों के साथ कोर्ट ने हाईकोर्ट का जमानत आदेश रद्द करते हुए सोनम को तीन सप्ताह के भीतर आत्मसमर्पण करने का निर्देश दिया था। इस मामले में मेघालय सरकार की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने पक्ष रखा।

सरकार ने माना- ई-20 पेट्रोल से बीएस-3 गाड़ियों को नुकसान, राज्यसभा में गडकरी बोले- कुछ रबर पार्ट्स बदलने पड़ सकते हैं, इंजन बदलने की आवश्यकता नहीं

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने बुधवार को पहली बार माना कि ई-20 पेट्रोल (20फीसदी एथेनॉल मिश्रित पेट्रोल) इस्तेमाल करने से

गाड़ियों को नुकसान पहुंच सकता है। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने राज्यसभा में लिखित जवाब में यह जानकारी दी। उन्होंने कहा- बीएस-3 मानक वाली कुछ पुरानी गाड़ियों

में ई-20 के कारण कुछ रबर पार्ट्स और गैस्केट बदलने पड़ सकते हैं। ये गाड़ियां मुख्य रूप से 2005 से 2016 के बीच बने हैं। ये पार्ट्स नियमित सर्विसिंग के दौरान आसानी से बदले जा सकते हैं। गडकरी ने कहा कि स्टडीज में ई-20 से गाड़ियों की कुल परफॉर्मेंस या टिकाऊपन पर कोई बड़ा असर नहीं पाया गया है। उन्होंने यह कहा कि इन गाड़ियों के इंजन में किसी तरह का बदलाव कराने की जरूरत नहीं है। यह पहली बार है, जब गडकरी ने इस तरह की बात कही है। नितिन गडकरी केंद्रीय परिवहन मंत्री- बीएस-3 गाड़ियों में ईंधन पाइप, सील, ओ-रिंग और अन्य रबर से बने कुछ हिस्सों को बदलने की जरूरत पड़ सकती है, क्योंकि एथेनॉल मिले पेट्रोल का असर पुराने रबर कंपोनेंट्स पर पड़ सकता है। सोसायटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैन्यूफैक्चरर्स (सियाम) व ऑटोमोटिव रिसर्च एसोसिएशन ऑफ इंडिया ने दोपहिया-चारपहिया वाहनों पर ई-20 ईंधन की स्टडी की थी। गडकरी ने यह भी कहा कि वाहन का माइलेज सिर्फ ईंधन पर निर्भर नहीं करता, बल्कि ड्राइविंग स्टाइल, सड़क की स्थिति, रखरखाव और अन्य कारकों से भी प्रभावित होता है। इसका इस्तेमाल दुनिया में एक सदी से ज्यादा समय से हो रहा है। वो सबकुछ, जो आपके लिए जानना जरूरी है-कौन-कौन से पार्ट्स बदलने पड़ सकते हैं? पाइप्स, ओ-रिंग, रबर सील, फ्यूल होज, गैस्केट, फ्यूल पंप के रबर कंपोनेंट, इंजेक्टर सील। ये पार्ट्स इंजन में होते हैं? नहीं। अधिकांश रबर पार्ट फ्यूल सिस्टम में होते हैं। किन गाड़ियों के पार्ट्स बदलने पड़ सकते हैं?यूरो-4 से नीचे के जितने भी व्हीकल्स हैं, उनमें जरूरत पड़ सकती है। संसद में पेश जवाब के मुताबिक, 1 अप्रैल 2005 से लागू बीएस-3 मानक के तहत 2016 से पहले बने दोपहिया है।दोपहिया में 500 से 1500 रुपए और फोरव्हीलर में 2 हजार से 8 हजार तक खर्च आ सकता है। पार्ट्स कितने अंतराल में बदलना पड़ेंगे? कोई तय समय या किलोमीटर नहीं है। जब आप रूटीन सर्विसिंग करवाएंगे, उसी दौरान घिसावट, रिसाव या खराबी मिलने पर बदले जाएंगे। पार्ट्स बदलने की जरूरत क्यों? एथेनॉल पुराने रबर को समय के साथ सख्त, मुलायम या फुला सकता है। पहले रबर एथेनॉल के लंबे संपर्क के हिसाब से नहीं बनाए गए थे।नुकसान रबर को ही या मेटल पर भी? असर रबर पार्ट्स तक सीमित है। यूरो-4 और नीचे की गाड़ी के मेटल पार्ट्स पर भी असर संभव। ई-20 पेट्रोल डलवाने के कितने समय बाद गाड़ी दिक्कत देनी शुरू करेगी? गाड़ी चलती रहेगी, तो कोई खराबी नहीं आएगी। बस, उसका मेंटेनेंस बढ़ाना होगा। कार-बाइक दोनों पर समान असर पड़ेगा? दोनों में असर की संभावना है, लेकिन यह वाहन के डिजाइन और फ्यूल सिस्टम पर निर्भर करेगा।

जम्मू-कश्मीर और उत्तराखंड में लैंडस्लाइड, रोकी गई केदारनाथ यात्रा,हरिद्वार में कांवड़िया बहा, राजस्थान समेत 16 राज्यों में बारिश का ऑरेंज अलर्ट

जयपुर/लखनऊ/पटना।गोंडा में घाघरा नदी का जलस्तर घटने से कटान और तेज हो गया है। जम्मू-कश्मीर के राजौरी में अक्चमल के

पास लैंडस्लाइड के बाद कारगिल-लेह नेशनल हाईवे ब्लॉक हो गया। गाड़ियों की आवाजाही रोक दी गई है।तेलंगाना के 5 जिलों में रेड अलर्ट, साइबराबाद में वर्क फ्रॉम होम की सलाह दी- आईएमडी ने गुरुवार को तेलंगाना के 5 जिलों में रेड अलर्ट जारी किया है। इनमें आदिलाबाद, वुग्मराम भीम आसिफाबाद, मंचरियल, निर्मल और जगतियाल के कुछ इलाके शामिल हैं। विभाग ने गुरुवार दोपहर 1 बजे से 31 जुलाई की सुबह 8.30 बजे तक तेज हवाओं के साथ भारी बारिश का अनुमान जताया है। साइबराबाद ने 'वर्क फ्रॉम होम' की सलाह दी है। असम में बाढ़ प्रभावित 13000 परिवार 11 दिन बाद भी अंधेरे में असम के बाढ़ प्रभावित इलाकों में करीब 13 हजार परिवारों के घरों में अभी भी बिजली नहीं है। राज्य में आई भीषण बाढ़ के 11 दिन बाद भी ये परिवार अंधेरे में रहने को मजबूर हैं। बाढ़ के कारण कई जिलों में भारी तबाही हुई थी और घरों में कीचड़ भर गया था। प्रभावित इलाकों में गौरीसागर, शिवसागर, नजीरा, अमगुरी और डेमो शामिल हैं। 19 जुलाई की सुबह से नागालैंड और ऊपरी असम के जिलों में हुई भारी बारिश ने तीन जिलों में भारी तबाही मचाई थी। बाढ़ के कारण मरने वालों की संख्या बढ़कर 78 हो गई है और तीन लाख से ज्यादा लोग अभी भी जलभराव की समस्या से जूझ रहे हैं। हरिद्वार में सूखी नदी में आई बाढ़, 2 गाड़ियां फंसी-उत्तराखंड के हरिद्वार में गुरुवार को करीब दो घंटे की मूसलाधार बारिश से कई निचले इलाकों में जलभराव हो गया। खड़खड़ी क्षेत्र के पास सूखी नदी रेस्क्यू शुरू किया। पिथौरागढ़ में पहाड़ से जीप पर गिरे पत्थर, कूदकर भागे लोग- पिथौरागढ़ के धारचूला में तीनतोला-गस्कू सड़क पर पहाड़ी से अचानक मलबा और बड़े-बड़े बोल्डर गिरने से एक यात्री जीप पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। चालक और एक यात्री ने समय रहते वाहन से कूदकर अपनी जान बचा ली। घटना के बाद मार्ग पर आवागमन जोखिमभरा हो गया है। अलकनंदा खतरे के निशान से ऊपर बह रही-उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले में भारी बारिश के बाद अलकनंदा और मंदाकिनी नदियां खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं। इससे आसपास के इलाकों में पानी भर गया है। कई मंदिर भी डूब गए हैं। उत्तराखंडः उत्तरकाशी में बड़ा पत्थर रोड पर गिरा-उत्तरकाशी के स्याना चट्टी क्षेत्र में पहाड़ी से भारी बोल्डर और मलबा गिरा। कुपड़ा गांव के पास एक बड़ा पत्थर तेज रफ्तार से सड़क तक आ पहुंचा, हालांकि उस समय कोई राहगीर मौजूद नहीं था। मध्य प्रदेश में मानसून एक बार फिर सक्रिय हो गया है। प्रदेश में मानसून ट्रफ, साइक्लोनिक सर्कुलेशन और शियर जोन समेत तीन मजबूत मौसम सिस्टम एक्टिव हैं। मौसम विभाग ने गुरुवार को उज्जैन, सागर समेत 17 जिलों के लिए अलर्ट जारी किया है। मौसम विभाग के अनुसार, 2 अगस्त को सात जिलों में तेज बारिश का अनुमान है। हालांकि इस दिन देवघर, दुमका, गिरिडीह, गोड्डा, जामताड़ा, पाकुड़ और साहेबगंज में भारी बारिश होने की संभावना है। यूपी के बलिया में सरयू नदी का पानी गांवों में घुस गया है। करीब 100 परिवार घर छोड़कर सुरक्षित स्थानों पर चले गए हैं। वाराणसी में गंगा का जलस्तर बढ़ने से 50 से ज्यादा छोटे-बड़े मंदिरों में पानी भर गया है। गोंडा में घाघरा नदी में कई बीघा जमीन और पेड़ नदी में समा चुके हैं। कटान के डर से लोग पलायन करने को मजबूर हैं। बंगाल की खाड़ी में बने डीप डिप्रेशन सिस्टम के असर से राजस्थान में लगातार बरसात हो रही है। इस सिस्टम का सर्वाधिक असर गुरुवार से देखने को मिलेगा। आज 11 जिलों में भारी बारिश का ऑरेंज अलर्ट है। वहीं, बीते 24 घंटे में जयपुर, प्रतापगढ़, दौसा और अलवर में एक इंच तक बरसात हुई। बिहार के 5 जिलों में गुरुवार को हल्की बारिश हो सकती है। लेकिन 33 जिलों में मौसम सामान्य रहेगा। इन जिलों में 40किमी/घंटा की रफ्तार से हवा भी चल सकती है। पिछले 24 घंटे में खगड़िया में बारिश हुई। पटना समेत कई जिलों में हल्की हवा चली। मौसम का हालः-31 जुलाईः-जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, उत्तराखंड, हिमाचल, मध्य प्रदेश, गुजरात रीजन, पूर्वी राजस्थान, मध्य महाराष्ट्र, कर्नाटक में भारी बारिश का ऑरेंज अलर्ट है। विदर्भ में रेड अलर्ट है। अरुणाचल, असम, मेघालय, नगालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली, छत्तीसगढ़, कोंकण-गोवा में भारी बारिश का यलो अलर्ट है। 1 अगस्तः-गुजरात रीजन में बारिश का रेड अलर्ट है। पूर्वी राजस्थान, पश्चिमी मध्य प्रदेश, मध्य महाराष्ट्र, कोंकण-गोवा, कर्नाटक में बारिश का ऑरेंज अलर्ट है। जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, उत्तराखंड, हिमाचल, पश्चिमी राजस्थान, बिहार, असम, मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, नगालैंड, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश, विदर्भ बारिश का यलो अलर्ट है।

मौत के 17 घंटे बाद जिंदा हुई 65-साल की महिला,आगरा में अचानक बोली- मैं जिंदा हूं, अंतिम संस्कार की हो रही थी तैयारी

आगरा। आगरा में मौत के करीब 17 घंटे बाद 65 वर्षीय महिला जिंदा हो गईं। अचानक से

दामाद का हाथ पकड़ लिया। कहा- 'मैं जिंदा हूं। मुझे कहां ले जा रहे।' यह सुनते ही घर में अफरा-तफरी मच गई। परिजन ने उन्हें तुरंत एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया, जहां उनका इलाज चल रहा है। मामला जिला मुख्यालय से 8 किमी दूर ट्रांस यमुना थाना क्षेत्र का है। दरअसल, महिला लीवर संबंधी बीमारी से पीड़ित थीं। बरेली के एक निजी अस्पताल में उनका इलाज चल रहा था। डॉक्टर ने बुधवार तड़के 3 बजे महिला को मृत घोषित कर दिया था। देर शाम को शव घर लाया गया। रिश्तेदार और परिचित अंतिम दर्शन के लिए जुटे थे। इसी दौरान दामाद अंतिम प्रणाम करने पहुंचे। जैसे ही उन्होंने सास के पैर छुए, महिला के शरीर में हलचल हुई और वह जीवित हो गईं। दरअसल श्रीनगर कॉलोनी निवासी शीला देवी के पति हरिओम माहौर का निधन हो चुका है। वह अपने बेटे सुनील माहौर के परिवार के साथ रहती हैं। उनका दूसरा बेटा संजीव माहौर बदायूं के एक निजी अस्पताल में कार्यरत है। करीब 20 दिन पहले शीला देवी इलाज के लिए उसके पास बदायूं गई थीं। इसके बाद बेटे ने सोमवार को उन्हें बरेली के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया। मंगलवार को उनकी हालत बिगड़ने पर वेंटिलेटर पर रखा गया। बुधवार तड़के करीब 3 बजे डॉक्टरों ने शीला देवी को मृत घोषित कर दिया। इसके बाद बेटा एंबुलेंस से उनका शव लेकर शाम करीब 7 बजे आगरा स्थित घर पहुंचा। शव को घर के एक कमरे में जमीन पर रखा गया। अंतिम संस्कार की तैयारियां शुरू हो गईं। फूल-मालाएं और अन्य सामान आ गया था, जबकि रिश्तेदार अंतिम विदाई के लिए पहुंचने लगे थे। अचानक से दामाद का हाथ पकड़ लीं, बोलीं- मैं जिंदा हूं-रात करीब 8 बजे उनके दामाद ने पैर छुए। इसी दौरान शीला देवी के शरीर में हलचल होने लगी। अचानक से उन्होंने दामाद का हाथ पकड़ लिया। कहा, 'मुझे कहां लेकर जा रहे हो? तुम सब रो क्यों रहे हो? मैं जिंदा हूं, मरी नहीं हूं।' यह सुनते ही परिवार के लोग हैरान रह गए। बिना देर किए परिजन उन्हें आगरा के एक निजी अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां उनका उपचार चल रहा है। पड़ोसी धर्मपाल ने बताया कि एंबुलेंस से शव घर लाने के बाद उसे कमरे में रखा गया था। इसी दौरान उनकी बेटी और दामाद पहुंचे। दामाद ने जैसे ही उनके पैर छुए, इसी दौरान उनकी सांसें लौट आईं।

हर घर तिरंगा अभियान-2026 को सफल बनाने हेतु अधिकारियों के साथ की बैठक,हर घर तिरंगा अभियान-2026 को सफल बनाने के लिए जिलाधिकारी ने दिए आवश्यक निर्देश

स्वतंत्रता दिवस से पूर्व हर घर पर लहराएगा तिरंगा-जिलाधिकारी,हर घर तिरंगा अभियान की तैरियों में तेजी लाने के निर्देश,प्रत्येक घर तक तिरंगा पहुंचाने एवं ध्वज संहिता का पूर्ण पालन सुनिश्चित करने पर जिलाधिकारी का जोर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जिलाधिकारी चरि्चत गौड़ ने आज हर घर तिरंगा अभियान-2026 के प्रभावी क्रियान्वयन के संबंध में संबंधित

अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए। उन्होंने कहा कि अभियान को जनभागीदारी के साथ उत्सव के रूप में मनाते हुए प्रत्येक घर तक तिरंगा पहुंचाने का लक्ष्य समयबद्ध ढंग से पूरा किया जाए। जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि अभियान के अंतर्गत स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार किए जा रहे राष्ट्रीय ध्वजों का निर्माण भारतीय ध्वज संहिता के अनुरूप गुणवत्ता के साथ सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि तैयार ध्वजों का समयबद्ध वितरण कर अधिकाधिक नागरिकों को अभियान से जोड़ा जाए, जिससे स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रत्येक घर पर सम्मानपूर्वक तिरंगा फहराया जा सके। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि ग्राम पंचायतों, विकास खंडों एवं संबंधित विभागों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित कर अभियान को व्यापक स्तर पर संचालित किया जाए। साथ ही स्वयं सहायता समूहों द्वारा निरि्मत ध्वजों के भुगतान एवं वितरण की प्रक्रिया भी पारदर्शी एवं समयबद्ध रूप से पूरण की जाए। जिलाधिकारी ने कहा कि हर घर तिरंगा अभियान केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रीय एकता एवं नागरिक कर्तव्य की भावना को सुदृढ़ करने का जनआंदोलन है। सभी अधिकारी अभियान को पूरी गंभीरता एवं जिम्मेदारी के साथ सफल बनाने हेतु आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करें। तिरंगा झण्डा फहराते समय बरती जाने वाला सावधानियां तिरंगे को हमेशा सम्मान के साथ फहराया जाए।. झंडा आयताकार होना चाहिए तथा इसकी लंबाई-चौड़ाई का अनुपात 3-2 होना चाहिए। केसरिया रंग हमेशा ऊपर रहेगा। झंडा जमीन, पानी या फर्श को नहीं छूना चाहिए। फटा, गंदा या क्षतिग्रस्त तिरंगा नहीं फहराना चाहिए। तिरंगे पर कुछ भी लिखना, छापना या चित्र बनाना प्रतिबंधित है। तिरंगे का उपयोग मेज, वाहन, मंच, मूरित या किसी वस्तु को ढकने के लिए नहीं किया जा सकता। किसी अन्य झंडे को तिरंगे से ऊपर या उससे अधिक सम्मानजनक स्थान पर नहीं लगाया जा सकता। वर्तमान नियमों के अनुसार, यदि तिरंगे को सम्मानपूर्वक प्रदर्शित किया जाए, तो उसे दिन और रात दोनों समय फहराया जा सकता है। कार्यक्रम के दौरान सभी लोग सावधान की मुद्रा में खड़े होकर राष्ट्रध्वज का सम्मान करें तथा राष्ट्रगान के समय अनुशासन बनाए रखना।

पेड़ से ही प्राण है अभियान के तहत कलेक्ट्रेट परिसर में जिलाधिकारी ने किया पौधरोपण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। सरदार भगत सिंह की अमर स्मृति में कलेक्ट्रेट परिसर

स्थित गांधी उद्यान में पर्यावरण बैंक द्वारा संचालित पेड़ से ही प्राण

है पेड़ लगाए पेड़ बचाए- अभियान के अंतर्गत पौधारोपण एवं पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री चरि्चत गोंड जिलाधिकारी सोनभद्र ने पीपल व बरगद का पौधा रोपित कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। उन्होंने उपस्थित लोगों से अधिक से अधिक पेड़ लगाने पेड़ बचाने का संकल्प लेने का आह्वान करते हुए कहा कि वृक्षों रक्षति रक्षित यदि हम वृक्ष की रक्षा करेंगे तो वृक्ष हमारी इच्छा करेंगे। प्रकृति का संतुलन बनाए रखने के लिए प्रत्येक नागरिक को वृक्षारोपण को अपना नैतिक दायित्व समझना चाहिए। दिनांक 1 अगस्त से 14 अगस्त 2026 तक लगातार 14 दिन मातृभूमि पर सर्वस्व न्यौछावर करने वाले अमर शहीदों व महापुरुषों की अमर स्मृति में जनपद सोनभद्र में 11000 पौधारोपण किये जाएंगे। इस अवसर पर श्री अभिषेक मिश्रा, श्री कान्ती सिंह, श्री राजाराम दूबे उपस्थित रहे।

जिला शिक्षा एवं अनुश्रवण समिति की समीक्षा बैठक सम्पन्न,परिषदीय विद्यालयों में मूलभूत सुविधाओं का संतृप्तकरण, डिजिटल उपस्थिति एवं सीसीटीवी व्यवस्था पर जिलाधिकारी ने दिए सख्त निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। शुक्रवार को

जिलाधिकारी चरि्चत गौड़ की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में जिला शिक्षा एवं अनुश्रवण समिति की बैठक की गयी। बैठक में जिलाधिकारी ने परिषदीय विद्यालयों में मूलभूत अवस्थापना सुविधाओं के संतृप्तकरण की स्थिति का बिन्दुवार जायजा लिया। बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने उपस्थित अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि जिला एवं विकास खण्ड स्तरीय जो टास्कफोर्स का बैठक किया गया है, वह निर्धारित लक्ष्य के सापेक्ष विद्यालयों का निरीक्षण कर उसकी रिपोर्ट समय-समय पर उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें। इस दौरान उन्होंने जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी को निर्देशित किया कि जनपद के उन विद्यालयों को चिन्हित करें जिसमें बच्चों/शिक्षक के आवागमन हेतु रास्ता सुचारू ठंग से नहीं है उसकी सूची उपलब्ध कराये जिससे कि उन विद्यालयों में पहुंचने हेतु सुव्यस्थितठंग से रास्ते का निरि्माण कराया जा सकें। बैठक के दौरान विद्यालयों के छात्रों के डिजिटल उपस्थिति की समीक्षा की गयी, समीक्षा में घोरावल व दुद्धी में उपस्थिति का प्रतिशत कम पाये जाने पर जिलाधिकारी ने खण्ड शिक्षा अधिकारी दूद्धी व घोरावल को स्पष्टीकरण जारी करने के निर्देश दिये। इस दौरान जिलाधिकारी ने जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी को निर्देशित करते हुए कहा कि जनपद में विद्यालयों में सी0सी0टी0वी0 कैमरे लगाने की व्यवस्था सुनिश्चित करायी जाये प्रारम्भ में दो सौ विद्यालयों में सी0सी0टी0वी0 कैमरें लगाये जाये उसके पश्चात अन्य विद्यालयों में भी सी0सी0टी0वी0 कैमरे सुरक्षा की दृष्टि से लगाये जाये। इस दौरान जिलाधिकारी ने कहा कि कस्तुरबा गॉधी आवासीय बालिका विद्यालय में छात्राओं के पठन-पाठन एवं खान-पान आदि व्यवस्थाओं के सम्बन्ध में जानकारी ली और निर्देशित किया कि कस्तुरबा गॉधी आवासीय बालिका विद्यालय में छात्राओं को सभी आवश्यक मूलभूत सुविधाएं निर्धारित समय पर उपलब्ध करायी जाये। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी जागृति अवस्थी ने अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि स्वच्छता अभियान के तहत सप्ताह में एक दिन साफ-सफाई की व्यवस्था सुनिश्चित करायी जाये और विद्यालयों में बच्चों के पठन पाठन हेतु टाइम टेबल निर्धारित करते हुए विभिन्न कक्षों में लगाया जाये। बैठक में जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी श्री मुकूल आनन्द पाण्डेय, जिला समाज कल्याण अधिकारी श्री ज्ञानेन्द्र सिंह भदौरिया, डी0सी0एन0आर0एल0एम0 सरिता सिंह, अपर जिला सूचना अधिकारी श्री विनय कुमार सिंह सम्बन्धितगण उपस्थित रहे।

क्या आप भी रोज चिप्स खाते हैं,डोपामिन के साथ बढ़ती डायबिटीज, हार्ट डिजीज का खतरा, क्रेविंग कम करने की 13 टिप्स

नयी दिल्ली। आज की फास्ट लाइफस्टाइल में चिप्स और फ्रेंच फ्राइज सिर्फ एक स्नैक नहीं, बल्कि आदत बन चुके हैं। हल्की भूख हो, मूवी देखनी हो या बस टाइम पास करना हो, हाथ अपने-आप पैकेट की तरफ बढ़ जाता है। लेकिन स्वाद और क्रंच के पीछे छिपा सच इतना हल्का नहीं है। रोजाना खाए जाने वाले ये

चिप्स धीरे-धीरे शरीर के अंदर कई गंभीर बदलाव शुरू कर देते हैं। 'नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन' में पब्लिश एक स्टडी के मुताबिक, चिप्स में मौजूद हाई सैचुरेटेड फैट से हाइपरटेंशन, कोरोनरी हार्ट डिजीज और डायबिटीज की रिस्क बढ़ता है। ये एक गंभीर चेतावनी है, क्योंकि बहुत से लोग स्नैक की तरह रोजाना चिप्स खाते हैं। इसलिए 'जरूरत की खबर' में आज हम डेली चिप्स खाने के हेल्थ रिस्क पर बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि- जब हम चिप्स खाते हैं तो शरीर में क्या होता है? चिप्स खाने की आदत को कैसे कंट्रोल करें? सवाल- अगर कोई रोज चिप्स खाए तो उससे शरीर पर क्या असर पड़ता है? जवाब- शुरुआत में यह मामूली आदत लग सकती है, लेकिन धीरे-धीरे इसका शरीर पर नकारात्मक असर पड़ता है। सवाल- चिप्स खाने से इन बीमारियों का रिस्क क्यों बढ़ जाता है? जवाब- इसे पॉइंटर्स से समझिए-

1. मोटापा (ओबिसिटी) चिप्स में कैलोरी और फैट हाई होता है। 50 ग्राम चिप्स में करीब 400 कैलोरी होती हैं। इसे खाने के बाद सेटायटी (संतुष्टि) नहीं होती। चिप्स का सारा फैट पेट और कमर पर जमा होता है। रिजल्ट- इससे मोटापा, फैटी लिवर, हॉर्मोनल असंतुलन का रिस्क बढ़ जाता है। 2. हार्ट डिजीज- चिप्स में ट्रांस फैट प्लस सैचुरेटेड फैट ज्यादा होता है। इससे बैड कोलेस्ट्रॉल (एलडीएल) बढ़ता है। गुड कोलेस्ट्रॉल (एचडीएल) घटता है। आर्टरीज में फैट जमने लगता है। रिजल्ट- हार्ट अटैक और स्ट्रोक का खतरा बढ़ता है-3. हाई ब्लड प्रेशर-चिप्स में नमक बहुत ज्यादा होता है। इससे शरीर में वाटर रिटेंशन होता है और ब्लड वॉल्यूम बढ़ता है। रिजल्ट- बीपी बढ़ता है। इससे हार्ट और किडनी पर दबाव बढ़ता है। 4. किडनी पर असर-ज्यादा नमक और तेल किडनी पर दबाव डालते हैं। इससे किडनी को ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है। रिजल्ट- किडनी फंक्शन कमजोर होता है। क्रॉनिक किडनी डिजीज का रिस्क बढ़ता है। 5. डायबिटीज का खतरा-रिफाइंड कार्ब्स तेजी से ब्लड शुगर बढ़ाते हैं। बार-बार शुगर स्पाइक होता है। इससे इंसुलिन रेजिस्टेंस बढ़ता है। रिजल्ट- टाइप 2 डायबिटीज का रिस्क बढ़ता है। 6. ब्रेन और मूड पर असर-हैप्पी हॉर्मोन 'डोपामिन' स्पाइक होता है। इससे अच्छा महसूस होता है। बार-बार खाने की क्रेविंग बढ़ती है। रिजल्ट- मूड स्विंग और चिड़चिड़ापन बढ़ता है। लंबे समय में फोकस और मेमोरी पर असर पड़ता है।7. डाइजेस्टिव सिस्टम-फाइबर नहीं होता है। ज्यादा खाने से गट माइक्रोबायोम बिगड़ता है। रिजल्ट- कब्ज, गैस, ब्लोटिंग की समस्या होती है। ब्रेन में हैप्पी हॉर्मोन 'डोपामिन' बढ़ाता है। इससे बार-बार खाने की क्रेविंग पैदा होती है, जो धीरे-धीरे लत में बदल सकती है। सवाल- क्या चिप्स छोटे बच्चों के लिए ज्यादा नुकसादायक है? जवाब- हां, छोटे बच्चों के लिए चिप्स ज्यादा नुकसानदायक है, क्योंकि उनका शरीर और इम्यून सिस्टम डेवलविंग फेज में होता है। बच्चे का विकास प्रभावित हो सकता है। किडनी और हार्ट पर दबाव पड़ता है। दांतों में कैविटी हो सकती है। ज्यादा खाने से वजन तेजी से बढ़ता है। जंक फूड की आदत से इम्यूनिटी कमजोर हो जाती है। भूख कम लगती है। ब्रेन डेवलपमेंट प्रभावित हो सकता है। मोटापा, टाइप 2 डायबिटीज और

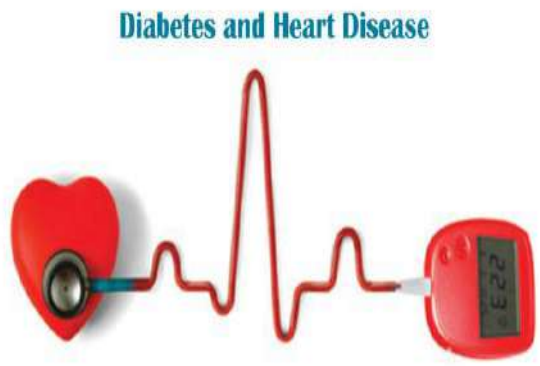

इम्यूनिटी कमजोर हो सकती है। 8. कैंसर का रिस्क-हाई टेम्परेचर पर तलने से एक्रिलामाइड नामक केमिकल बनता है। यह शरीर के लिए टॉक्सिक माना जाता है रिजल्ट- लंबे समय में कैंसर का रिस्क हो सकता है। 9. इम्यूनिटी पर असर- ट्रांस फैट इम्यून सेल्स की कार्यक्षमता को कम करता है। इससे शरीर की बीमारियों से लड़ने की क्षमता कमजोर हो जाती है। रिजल्ट- धीरे-धीरे इम्यूनिटी कमजोर हो जाती है। सवाल- अगर कोई रोज एक पैकेट (48 ग्राम) चिप्स खाए तो वह साल भर में कितना नमक, चीनी और पाम ऑयल खाएगा?

जवाब- 48 ग्राम के एक पैकेट चिप्स में औसतन 1.3 ग्राम नमक, 11.4 ग्राम चीनी और 46 ग्राम पाम ऑयल (फैट) होता है। अगर कोई एक पैकेट चिप्स रोज खाता है तो वह साल भर में कितना नमक, चीनी और तेल कंज्यूम करेगा। चिप्स में नमक, चीनी और तेल के अलावा कई हिडेन कंपाउंड्स होते हैं, जो लंबे समय में शरीर को नुकसान पहुंचा सकते हैं। सवाल- क्या कोई ऐसी साइंस स्टडी या रिसर्च है, जो बताए कि चिप्स खाना सेहत के लिए नुकसानदायक है? जवाब- हां, आपको शायद ये जानकर आश्चर्य हो कि अब तक लाखों लोगों पर हुई 100 से ज्यादा साइंस स्टडीज ये साबित कर चुकी हैं कि चिप्स खाने से मेटाबॉलिक बीमारियों को रिस्क बढ़ता है। निष्कर्ष- जो लोग चिप्स ज्यादा खाते हैं, उनमें डायबिटीज का रिस्क लगभग 3 गुना तक ज्यादा होता है। सवाल- क्या रोज चिप्स खाने से इसकी लत भी लग सकती है? जवाब- हां, चिप्स में नमक, फैट और फ्लेवर का ऐसा कॉम्बिनेशन होता है, जो पॉइंटर्स से समझिए- पैकेट चिप्स फैक्ट्री में बनते हैं। अल्ट्रा-प्रोसेस्ड होते हैं। नमक, फ्लेवर और प्रिजर्वेटिव्स ज्यादा होते हैं। रिफाइंड/बार-बार इस्तेमाल किया तेल रीयूज किया जाता है। ज्यादा खाने की क्रेविंग बढ़ाते हैं। घर पर बने चिप्स ताजे आलू से बने होते हैं। नमक और मसाले सीमित होते हैं। कोई केमिकल या प्रिजर्वेटिव नहीं होता है। तेल की क्वालिटी और मात्रा ठीक होती है। ध्यान रखें- चिप्स चाहे पैकेज्ड हों या घर पर बने हों, ये रोज खाने के लिए सही नहीं हैं। घर के बने चिप्स कभी-कभार खा सकते हैं।सवाल- चिप्स का हेल्दी विकल्प क्या है? जवाब- कुछ हेल्दी और टेस्टी विकल्प हैं, जो स्वाद के साथ-साथ सेहत के लिए भी फायदेमंद हैं, सवाल- चिप्स खाने की आदत को कैसे कंट्रोल करें? जवाब- चिप्स खाने की आदत क्रेविंग और हैबिट से जुड़ी होती है। इसे कंट्रोल करने के लिए कुछ स्मार्ट तरीके अपनाना जरूरी है। डॉक्टर साकेत कांत के मुताबिक, महीने में 1-2 बार खा सकते हैं। लेकिन रोज या बार-बार खाना बेहद नुकसानदायक है।

हमारी शादी हुई हैं जल्द ही हम माता-पिता बनने वाले हैं पर अनुभव की कमी हैं,अच्छा अभिवावक बनने के लिए सबसे जरूरी क्या है?

जयपुर। विषय को समझेंगे एक्सपर्ट: डॉ. अमिता श्रृंगी, साइकोलॉजिस्ट, फैमिली एंड चाइल्ड काउंसलर, जयपुर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मैं अहमदाबाद से हूं। मेरी शादी को 3 साल हो गए हैं। जल्द ही हम पेरेंट बनने वाले हैं। जाहिर

है, इस कारण हमारी एंग्जाइटी भी थोड़ी बढ़ी हुई है। हम पेरेंटिंग पर तमाम किताबें पढ़ रहे हैं, पॉडकास्ट सुन रहे हैं। हालांकि खुशी हुई कि आप इस नई जिम्मेदारी से पहले खुद को तैयार कर रहे हैं। अवेयरनेस ही अच्छी पेरेंटिंग की पहली सीढ़ी है। सबसे पहले तो ये समझिए कि जब बच्चा दुनिया में आता है तो उसे सुख-सुविधाओं वाले पेरेंट्स से ज्यादा हैप्पी पेरेंट्स की जरूरत होती है। माता-पिता का खुश रहना ही बच्चे के लिए सबसे खूबसूरत तोहफा है। वियतनामी बौद्ध भिक्षु और मशहूर राइटर थिच न्यात हन्ह ने अपनी किताब 'फिडिलिटी: हाउ टू क्रिएट लविंग रिलेशनशिप दैट लास्ट्स' में इस बारे में लिखा है-किताबें पढ़ना और पॉडकास्ट सुनना अच्छी बात है, क्योंकि ये हमें दिशा देते हैं। लेकिन यह समझना जरूरी है कि ये सब पढ़ना-सुनना और कनफ्यूज कर रहा है। क्या आप हमें कुछ बेसिक टिप्स दे सकते हैं कि हमें किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। जवाब- सबसे पहले आप दोनों को इस नई यात्रा के लिए बहुत बधाई। पढ़कर पेरेंटिंग की असली नींव किसी ट्रेंड या तकनीक पर नहीं, बल्कि घर के माहौल पर टिकी होती है। बच्चा सबसे पहले अपने आसपास के वातावरण से ही सीखता है। अच्छी पेरेंटिंग कोई हेलीकॉप्टर पेरेंटिंग करना या सुपर मॉम-डैड होना नहीं है। पेरेंट होने की जो एकदम बेसिक जिम्मेदारी है, वो है बच्चे को अनकंडीशनल प्यार और सिक्योरिटी देना।अक्सर हम बच्चे के आने की तैयारी कपड़ों, खिलौनों और कमरे की सजावट से करते हैं। लेकिन भावनात्मक तैयारी को नजरअंदाज कर देते हैं। जबकि सच्चाई यह है कि पेरेंटिंग की असली शुरुआत बच्चे के जन्म से पहले हमारी सोच, हमारे रिश्ते और हमारे धैर्य से हो जाती है। ऐसे में नए पेरेंट्स के लिए जरूरी है कि वे खुद को मानसिक रूप से तैयार करें। यह समझें कि पेरेंटिंग कोई परफॉर्मेंस नहीं है, बल्कि यह सीखने की निरंतर प्रक्रिया है। आप जितने मजबूत और संतुलित होंगे, बच्चे को उतना ही सुरक्षित और खुशहाल माहौल दे पाएंगे। इस तैयारी को आसान बनाने के लिए यह छोटी-सी चेकलिस्ट मददगार हो सकती है-इमोशनली तैयार रहें पेरेंटिंग सिर्फ फिजिकल नहीं, इमोशनल जिम्मेदारी भी है। बच्चे के आने के बाद आपकी नींद, रूटीन और प्राथमिकताएं बदलती हैं। अगर आप मानसिक रूप से तैयार रहेंगे तो बदलाव को स्वीकार करना आसान होगा और बच्चे को संतुलित रिश्ता बनाए रखना पेरेंटिंग का अहम हिस्सा है। सुनने की आदत डालें-अक्सर पेरेंट्स बच्चों को समझाने पर ज्यादा ध्यान देते हैं, उन्हें सुनने पर कम। लेकिन एक अच्छा पेरेंट वही है, जो बच्चे की बातों, भावनाओं और छोटे-छोटे

बार-बार दोहराते हैं। ऐसे में गुस्सा करने की बजाय धैर्य रखना जरूरी है।आपका शांत-सरल व्यवहार ही बच्चे को सही मार्गदर्शन देता है। गलतियां स्वीकारना सीखें-कोई भी पेरेंट परफेक्ट नहीं होता। अगर गलती हो जाए तो उसे स्वीकार करें। इससे बच्चा भी अपनी गलतियों को स्वीकारना सीखता है और रिश्ते में भरोसा बढ़ता है। पेरेंटिंग को 'प्रोजेक्ट' न समझें-पेरेंटिंग कोई टास्क या प्रोजेक्ट नहीं है, जिसे परफेक्ट तरीके से पूरा करना है।

नेचुरल लैक्सेटिव,कब्ज से दिलाए राहत,पाचन रखे दुरुस्त एक्सपर्ट से जानें डाइट में कैसे शामिल करें

नयी दिल्ली। आज की तेज रफ्तार जिंदगी में खराब लाइफस्टाइल और अनियमित खानपान के कारण कब्ज एक कॉमन समस्या बन गई है। अगर लंबे समय तक कब्ज बना रहे तो इससे बॉडी फंक्शनिंग और ओवरऑल हेल्थ प्रभावित होती है। 'एबॉट' की गट हेल्थ सर्वे रिपोर्ट के अनुसार, भारत में करीब 22फीसदी वयस्कों को कब्ज है। इनमें से 13फीसदी लोग गंभीर रूप से प्रभावित हैं। अक्सर लोग कब्ज से राहत के लिए दवाएं लेते हैं। जबकि नेचुरल लैक्सेटिव कब्ज से राहत दिला सकते हैं। ये ऐसे फूड या सब्सटेंस होते हैं, जिससे बाउल मूवमेंट सुधरता है। इससे स्टूल सॉफ्ट हो जाता है और कब्ज की समस्या नहीं होती है। इसलिए आज जरूरत की खबर में जानेंगे कि-नेचुरल लैक्सेटिव क्या होते हैं? जवाब- नेचुरल लैक्सेटिव क्या होते हैं? ये शरीर में कैसे काम करते हैं? किन फूड्स में नेचुरल लैक्सेटिव होता है? विषय को समझेंगे एक्सपर्ट: डॉ. नृपेन साइकिया, सीनियर कंसल्टेंट, गैस्ट्रोलॉजी, पीएसआरआई हॉस्पिटल, दिल्ली जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- लैक्सेटिव क्या होते हैं? जवाब- लैक्सेटिव यानी ऐसी दवाएं या खाने की चीजें, जो कब्ज में राहत देकर पेट साफ करने में मदद करती हैं। लैक्सेटिव अलग-अलग तरीके से काम करते हैं। आमतौर पर डॉक्टर पेट साफ न होने पर लैक्सेटिव्स देते हैं। सवाल- नेचुरल लैक्सेटिव क्या होते हैं?जवाब- से फूड्स नेचुरल लैक्सेटिव होते हैं? जवाब- नेचुरल लैक्सेटिव वो फाइबर रिच फूड होते हैं, जो पेट को साफ रखने में मदद करते हैं। कुछ फल नेचुरल लैक्सेटिव की तरह काम करते हैं। पपीता, अमरूद, सेब (छिलके सहित), नाशपाती, केला (पका हुआ), संतरा, मौसंबी, अंगूर, कीवी और

अनार जैसे फल फाइबर से भरपूर होते हैं। फाइबर स्टूल का वॉल्यूम बढ़ाता है और उसे सॉफ्ट बनाता है, जिससे बाउल मूवमेंट आसान हो जाती है। इसके अलावा इन फलों में पानी की मात्रा अधिक होती है, जो बॉडी को हाइड्रेट रखती है और कब्ज की समस्या कम करती है। अंजीर (ताजा/सूखा) अंजीर में हाई फाइबर होता है, खासकर इसके छोटे-छोटे बीज आंतों को स्टिमुलेट करते हैं। यह स्टूल को सॉफ्ट बनाता है और आसानी से बाहर निकालने में मदद करता है। इसलिए इसे पहले के समय में कब्ज के घरेलू उपाय के रूप में इस्तेमाल किया जाता रहा है। प्रून्स (सूखा आलूबुखारा) प्रून्स में एक नेचुरल तत्व 'सॉर्बिटोल' होता है।

राजस्थान के कप्तान रियान पराग ई-सिगरेट पीते दिखे,ड्रेसिंग रूम का वीडियो वायरल, देश में बैन, बीसीसीआई कार्रवाई कर सकता है

नयी दिल्ली। आईपीएल 2026 में राजस्थान रॉयल्स (आरआर) के कप्तान रियान पराग विवाद में फंस गए हैं। मंगलवार को पंजाब किंग्स के खिलाफ खेले गए मैच के दौरान वह ड्रेसिंग रूम में ई-सिगरेट पीते कैमरे में कैद हुए। इस मामले में भारतीय बोर्ड बीसीसीआई ने पराग से जवाब मांगा है। द इंडियन एक्सप्रेस की एक रिपोर्ट के मुताबिक, बीसीसीआई के एक अधिकारी ने पुष्टि की है कि बोर्ड ने इस हरकत के लिए रियान पराग से जवाब मांगा है। लाइव ब्रॉडकास्ट की यह क्लिप सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है। वीडियो राजस्थान की

बल्लेबाजी के 16वें ओवर का है। इसमें पराग ध्रुव जुरेल और यशस्वी जायसवाल की मौजूदगी में कथित तौर पर ई-सिगरेट पीते दिख रहे हैं।रियान पराग का ई-सिगरेट पीना गलत माना जा रहा है। भारत सरकार ने 'ई-सिगरेट निषेध अधिनियम 2019' के तहत वेप्स और ई-सिगरेट के उत्पादन, बिक्री, आयात और विज्ञापन पर प्रतिबंध लगाया है। उल्लंघन पर जुर्माने और जेल की सजा का प्रावधान है। ऐसे में एलीट एथलीट और टीम कप्तान का सार्वजनिक मंच पर इसका इस्तेमाल कानून और खेल की मर्यादा का उल्लंघन माना जा रहा है।बीसीसीआई सचिव से जवाब मांगा गया, सख्त कार्रवाई की उम्मीद- इस मामले पर बीसीसीआई के सचिव देवजीत सैकिया से प्रतिक्रिया मांगी गई है। माना जा रहा है कि बोर्ड इसे गंभीरता से लेगा। एथलीट के लिए वेपिंग (ई-सिगरेट) स्वास्थ्य के लिहाज से खतरनाक है। यह सुरक्षा मानकों का उल्लंघन है, क्योंकि इसके तत्वों की स्पष्ट जानकारी नहीं होती। देश में यह प्रतिबंधित है। बीसीसीआई कप्तान और फ्रेंचाइजी से जवाब तलब कर सकता है। राजस्थान रॉयल्स इस IPL सीजन में दूसरी बार प्रोटोकॉल उल्लंघन को लेकर चर्चा में है। इससे पहले टीम के मैनेजर रोमी भिंडर डगआउट में मोबाइल इस्तेमाल करते पकड़े गए थे, जो प्लेयर मैच ऑफरेशंस एरिया प्रोटोकॉल का उल्लंघन था। उस मामले में बीसीसीआई ने जांच के बाद मैनेजर पर जुर्माना लगाया था और चेतावनी दी थी। अब कप्तान का वीडियो सामने आने के बाद टीम की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। खिलाड़ियों की फिटनेस और युवाओं पर असर की चिंता-रियान पराग युवा पीढ़ी के रोल मॉडल माने जाते हैं। विशेषज्ञों के मुताबिक, वेपिंग स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। इससे खिलाड़ियों की फेफड़ों की क्षमता पर बुरा असर पड़ता है। भारत में वेपिंग गैर-कानूनी है, इसलिए बीसीसीआई और आईपीएल गवर्निंग काउंसिल इस पर 'जीरो टॉलरेंस' नीति अपना सकती है। जांच में दोष सिद्ध होने पर पराग पर मैच बैन या जुर्माना लगाया जा सकता है।

हेल्दी वोकल कॉर्ड्स के 9 टिप्स

आवाज में अचानक बदलाव किसी बीमारी का इशारा तो नहीं, ये बदलाव दिखे तो तुरंत डॉक्टर से मिलें

नयी दिल्ली। हम आवाज को सिर्फ कम्युनिकेशन का जरिया मानते हैं, लेकिन यह हमारी सेहत का एक अहम संकेत भी है। आमतौर पर सर्दी-जुकाम या थकान होने पर आवाज में हल्का बदलाव होता है। कई बार आवाज में बदलाव डायबिटीज, थायरॉइड, हार्ट डिजीज या न्यूरोलॉजिकल प्रॉब्लम्स का इशारा भी हो सकता है। दरअसल आवाज ब्रेन, लंग्स और वोकल कॉर्ड्स के कोऑर्डिनेशन से बनती है। इसलिए इनमें किसी भी गड़बड़ी का असर तुरंत आवाज पर दिखता है। ऐसे में सवाल ये है कि आवाज में हो रहे कौन-से बदलाव सामान्य हैं और किन्हें नजरअंदाज नहीं करना चाहिए? आज जानेंगे कि आवाज कैसे सेहत का हाल बताती है। साथ ही जानेंगे कि- आवाज में किस तरह के बदलाव गंभीर हो सकते हैं? आवाज में कौन-से बदलाव किस बीमारी का संकेत हैं? डॉ. राजुल अग्रवाल डायरेक्टर, न्यूरोलॉजी, श्री बालाजी एक्शन मेडिकल इंस्टीट्यूट, दिल्ली जी के साथ और समझेंगे अच्छे से सवाल जवाब के माध्यम से।

सवाल- हमारी आवाज शरीर के किन ऑर्गन्स पर निर्भर करती है? जवाब- आवाज एक न्यूरो-मस्कुलर और रेस्पिरेटरी प्रक्रिया है, जिसमें कई अंग मिलकर काम करते हैं। ब्रेनः बोलने का कंट्रोल सेंटर है, जो सांस, मसल्स और आवाज को निर्देश देता है। फेफड़ेः हवा का दबाव बनाते हैं, जो आवाज की ऊर्जा का मुख्य सोर्स है। वोकल कॉर्ड्स (लैरिंक्स)ः हवा के गुजरने पर कंपन करते हैं और आवाज पैदा करते हैं। जीभ, होंठ और दांतः आवाज को स्पष्ट शब्दों में बदलते हैं, इसे आर्टिक्युलेशन कहते हैं। नाक और गलाः आवाज की गूंज, टोन और क्वालिटी तय करते हैं। सवाल- क्या आवाज में अचानक बदलाव किसी छिपी हुई हेल्थ कंडीशन का संकेत हो सकता है? जवाब- आवाज में अचानक बदलाव अंदरूनी समस्या का संकेत हो सकता है। हमारी आवाज ब्रेन, नर्व्स और रेस्पिरेटरी सिस्टम से जुड़ी होती है। इसलिए कई बार बदलाव का कारण गंभीर भी हो सकता है। सवाल- आवाज में किस तरह के बदलाव कॉमन हैं? जवाब- आवाज में हल्के बदलाव सर्दी-जुकाम, एलर्जी, डिहाइड्रेशन या ज्यादा बोलने के कारण हो सकते हैं। आवाज बैठना (होर्सनेस)ः आवाज भारी या भर्राई लगती है।आवाज कमजोर होनाः आवाज धीमी या कम स्पष्ट हो जाती है। पिच में बदलावः आवाज ऊंची या नीची हो सकती है। फुसफुसाती या टूटी आवाजः सांस के साथ आवाज टूट सकती है। बोलने की स्पीड बदलनाः कभी तेज, कभी धीमी हो सकती है। खराश या म्यूकसः गले में बलगम से स्पष्टता कम हो जाती है। कुछ बदलाव गंभीर बीमारी के शुरुआती संकेत हो सकते हैं, इसलिए इन्हें नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। नीचे ग्राफिक में दिए लक्षण स्ट्रोक, न्यूरोलॉजिकल डिजीज या कैंसर से जुड़े हो सकते हैं। इसमें तुरंत डॉक्टर से सलाह लेना जरूरी है। ऐसे बदलाव हो तो डॉ से सलाह ले अचानक बोली लड़खड़ाना। शब्द स्पष्ट न निकलना। आवाज कमजोर, धीमी होना। एक ही टोन में बोलना। आवाज का बार-बार टूटना। खांसी के साथ खून आना। निगलने सास लेने में दर्द, खराश, बोलने में थकान। 2-3 हफ्ते से ज्यादा होर्सनेसः लगातार भारी या बैठी आवाज गले की समस्या का संकेत हो सकती है। अचानक बोली लड़खड़ानाः स्ट्रोक या न्यूरोलॉजिकल समस्या का संकेत हो सकता है। बोलने पर खांसी के साथ खूनः गले या फेफड़ों की गंभीर बीमारी का रिस्क हो सकता है। कमजोर या मोनोटोन आवाजः नसों या ब्रेन से जुड़ी समस्या का संकेत हो सकता है। सांस लेने में दिक्कतः रेस्पिरेटरी सिस्टम की समस्या का संकेत है। सवाल- क्या आवाज में आए बदलाव को आइडेंटिफाई कर बीमारियां भी डायग्नोज की जा सकती हैं? जवाब- हां, आवाज में बदलाव का एनालिसिस कर कुछ बीमारियों के संकेत पहचाने जा सकते हैं। हाल के वर्षों में वॉइस एनालिसिस और एआई टेक्नीक्स पर तेजी से रिसर्च हुई है। ये टेक्नीक्स न्यूरोलॉजिकल बीमारियों से ब्रेन और नर्व्स प्रभावित होती हैं, जिससे बोलने के लिए जरूरी मसल्स पर कंट्रोल कम हो जाता है। पार्किंसन डिजीजः आवाज धीमी, मोनोटोन, कम वॉल्यूम और सांस भारी होती है। वोकल कॉर्ड्स में हल्का कंपन (ट्रेमर) भी देखा जा सकता है। आवाज की स्पष्टता कम हो जाती है और शब्द साफ नहीं निकलते। अल्जाइमर्स/डिमेंशियाः बोलने की स्पीड धीमी हो जाती है और व्यक्ति बार-बार रुकता है। ब्रेन को शब्द खोजने में कठिनाई होती है, वाक्य छोटे और सरल हो जाते हैं। बातचीत में दोहराव बढ़ सकता है। सवाल- क्या आवाज में हर बदलाव बीमारी का संकेत होता है? जवाब- नहीं, ज्यादातर बदलाव अस्थायी कारणों जैसे होते हैं और सही देखभाल से ठीक हो जाते हैं। सर्दी-जुकाम या एलर्जीः अस्थायी होर्सनेस (आवाज बैठना) कॉमन है। डिहाइड्रेशनः गला सूखने से आवाज भारी हो सकती है। ज्यादा बोलना/चिल्लानाः वोकल कॉर्ड्स पर दबाव पड़ने से आवाज बदलती है। कैफीन या अल्कोहलः गले को ड्राई करके आवाज प्रभावित कर सकते हैं। सवाल- क्या उम्र बढ़ने के साथ आवाज में बदलाव होना स्वाभाविक है? जवाब- हां, उम्र बढ़ने के साथ आवाज में बदलाव होना सामान्य है। इसे मेडिसिनल लैंग्वेज में 'प्रेस्बीफोनिया' कहा जाता है। आवाज में ताकत कम हो सकती है। हल्का कंपन

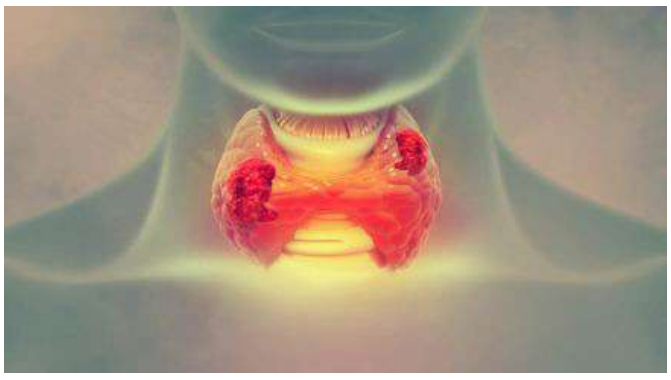

हां, आवाज में बदलाव का एनालिसिस कर कुछ बीमारियों के संकेत पहचाने जा सकते हैं। हाल के वर्षों में वॉइस एनालिसिस और एआई टेक्नीक्स पर तेजी से रिसर्च हुई है। ये टेक्नीक्स न्यूरोलॉजिकल बीमारियों से ब्रेन और नर्व्स प्रभावित होती हैं, जिससे बोलने के लिए जरूरी मसल्स पर कंट्रोल कम हो जाता है। पार्किंसन डिजीजः आवाज धीमी, मोनोटोन, कम वॉल्यूम और सांस भारी होती है। वोकल कॉर्ड्स में हल्का कंपन (ट्रेमर) भी देखा जा सकता है। आवाज की स्पष्टता कम हो जाती है और शब्द साफ नहीं निकलते। अल्जाइमर्स/डिमेंशियाः बोलने की स्पीड धीमी हो जाती है और व्यक्ति बार-बार रुकता है। ब्रेन को शब्द खोजने में कठिनाई होती है, वाक्य छोटे और सरल हो जाते हैं। बातचीत में दोहराव बढ़ सकता है। सवाल- क्या आवाज में हर बदलाव बीमारी का संकेत होता है? जवाब- नहीं, ज्यादातर बदलाव अस्थायी कारणों जैसे होते हैं और सही देखभाल से ठीक हो जाते हैं। सर्दी-जुकाम या एलर्जीः अस्थायी होर्सनेस (आवाज बैठना) कॉमन है। डिहाइड्रेशनः गला सूखने से आवाज भारी हो सकती है। ज्यादा बोलना/चिल्लानाः वोकल कॉर्ड्स पर दबाव पड़ने से आवाज बदलती है। कैफीन या अल्कोहलः गले को ड्राई करके आवाज प्रभावित कर सकते हैं। सवाल- क्या उम्र बढ़ने के साथ आवाज में बदलाव होना स्वाभाविक है? जवाब- हां, उम्र बढ़ने के साथ आवाज में

बदलनाः कभी तेज, कभी धीमी हो सकती है। खराश या म्यूकसः गले में बलगम से स्पष्टता कम हो जाती है। कुछ बदलाव गंभीर बीमारी के शुरुआती संकेत हो सकते हैं, इसलिए इन्हें नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। नीचे ग्राफिक में दिए लक्षण स्ट्रोक, न्यूरोलॉजिकल डिजीज या कैंसर से जुड़े हो सकते हैं। इसमें तुरंत डॉक्टर से सलाह लेना जरूरी है। ऐसे बदलाव हो तो डॉ से सलाह ले अचानक बोली लड़खड़ाना। शब्द स्पष्ट न निकलना। आवाज कमजोर, धीमी होना। एक ही टोन में बोलना। आवाज का बार-बार टूटना। खांसी के साथ खून आना। निगलने सास लेने में दर्द, खराश, बोलने में थकान। 2-3 हफ्ते से ज्यादा होर्सनेसः लगातार भारी या बैठी आवाज गले की समस्या का संकेत हो सकती है। अचानक बोली लड़खड़ानाः स्ट्रोक या न्यूरोलॉजिकल समस्या का संकेत हो सकता है। बोलने पर खांसी के साथ खूनः गले या फेफड़ों की गंभीर बीमारी का रिस्क हो सकता है। कमजोर या मोनोटोन आवाजः नसों या ब्रेन से जुड़ी समस्या का संकेत हो सकता है। सांस लेने में दिक्कतः रेस्पिरेटरी सिस्टम की समस्या का संकेत है। सवाल- क्या आवाज में आए बदलाव को आइडेंटिफाई कर बीमारियां भी डायग्नोज की जा सकती हैं? जवाब- हां, आवाज में बदलाव का एनालिसिस कर कुछ बीमारियों के संकेत पहचाने जा सकते हैं। हाल के वर्षों में वॉइस एनालिसिस और एआई टेक्नीक्स पर तेजी से रिसर्च हुई है। ये टेक्नीक्स न्यूरोलॉजिकल बीमारियों से ब्रेन और नर्व्स प्रभावित होती हैं, जिससे बोलने के लिए जरूरी मसल्स पर कंट्रोल कम हो जाता है। पार्किंसन डिजीजः आवाज धीमी, मोनोटोन, कम वॉल्यूम और सांस भारी होती है। वोकल कॉर्ड्स में हल्का कंपन (ट्रेमर) भी देखा जा सकता है। आवाज की स्पष्टता कम हो जाती है और शब्द साफ नहीं निकलते। अल्जाइमर्स/डिमेंशियाः बोलने की स्पीड धीमी हो जाती है और व्यक्ति बार-बार रुकता है। ब्रेन को शब्द खोजने में कठिनाई होती है, वाक्य छोटे और सरल हो जाते हैं। बातचीत में दोहराव बढ़ सकता है। सवाल- क्या आवाज में हर बदलाव बीमारी का संकेत होता है? जवाब- नहीं, ज्यादातर बदलाव अस्थायी कारणों जैसे होते हैं और सही देखभाल से ठीक हो जाते हैं। सर्दी-जुकाम या एलर्जीः अस्थायी होर्सनेस (आवाज बैठना) कॉमन है। डिहाइड्रेशनः गला सूखने से आवाज भारी हो सकती है। ज्यादा बोलना/चिल्लानाः वोकल कॉर्ड्स पर दबाव पड़ने से आवाज बदलती है। कैफीन या अल्कोहलः गले को ड्राई करके आवाज प्रभावित कर सकते हैं। सवाल- क्या उम्र बढ़ने के साथ आवाज में बदलाव होना स्वाभाविक है? जवाब- हां, उम्र बढ़ने के साथ आवाज में

खूबसूरती के लिए इंजेक्शन लगवाना, सीडीएससीओ ने बताया गैरकानूनी, नर्व डैमेज और एलर्जिक रिएक्शन का रिस्क, इससे दूर रहें

मुंबई। आजकल 'इंस्टेंट ग्लो' की चाह में कॉस्मेटिक इंजेक्शन और आईवी ड्रिप्स का ट्रेंड बढ़ा है। सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर्स, मॉडल्स और सेलिब्रिटीज को देखकर लोग ये ब्यूटी ट्रेंड्स अपना रहे हैं। लेकिन यह कितना रिस्की हो सकता है, कम ही लोग जानते हैं। हाल ही में 'सेंट्रल ड्रग्स स्टैंडर्ड कंट्रोल ऑर्गनाइजेशन' (सीडीएससीओ) ने साफ किया है कि कॉस्मेटिक प्रोडक्ट्स को इंजेक्शन के रूप में इस्तेमाल करना नियमों के खिलाफ है और ऐसी प्रैक्टिसेज पर सख्ती जरूरी है। इसलिए जानेंगे कि- कॉस्मेटिक इंजेक्शन क्या होते हैं? लोग इन्हें क्यों लेते हैं? इनके क्या साइड इफेक्ट्स हैं? विषय को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. विनोद विज, कंसल्टेंट, प्लास्टिक एंड कॉस्मेटिक सर्जरी, अपोलो हॉस्पिटल, नवी मुंबई जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- कॉस्मेटिक मेडिकल टर्म नहीं है। यह आम बोलचाल में इस्तेमाल होता है। सवाल- क्या ग्लो इंजेक्शन और कॉस्मेटिक इंजेक्शन एक ही चीज हैं? जवाब- नहीं, ये एक ही चीज नहीं हैं। ग्लो इंजेक्शन, कॉस्मेटिक इंजेक्शन की एक सब कैटेगरी है। सवाल- क्या ये इंजेक्शन सच में स्किन को गोरा या चमकदार बनाते हैं? जवाब- नहीं, इन इंजेक्शन्स में मौजूद ग्लूटाथियोन, मेलानिन (स्किन पिगमेंट) बनने की प्रक्रिया को प्रभावित कर सकता है। इससे- स्किन थोड़ी ब्राइट या इवन-टोन दिख सकती है। यह असर सीमित, अस्थायी और व्यक्ति पर निर्भर होता है। इंजेक्शन लेना बंद करने पर स्किन पहले जैसी हो सकती है। किसी भी इंजेक्शन को 'गारंटीड स्किन व्हाइटनिंग' का उपाय नहीं माना जा सकता। सवाल- कॉस्मेटिक इंजेक्शन का असर कितने समय तक रहता है? जवाब- इनका असर आमतौर पर कुछ हफ्तों से कुछ महीनों तक रहता है। शुरुआत में असर दिखने में 3-6 हफ्ते लग सकते हैं। अगर असर दिखता है, तो यह आमतौर पर 2-3 महीने तक टिकता है। ट्रीटमेंट बंद करते ही स्किन धीरे-धीरे पहली स्थिति में लौट सकती है। सवाल- क्या कॉस्मेटिक इंजेक्शन एक बार लेने के बाद बार-बार लेना पड़ता है? जवाब- हां, आमतौर पर बार-बार लेना पड़ता है, क्योंकि इसका असर अस्थायी होता है। सवाल- सीडीएससीओ ने कॉस्मेटिक इंजेक्शन को लेकर क्या कहा है? जवाब- सीडीएससीओ ने स्पष्ट किया है कि किसी भी कॉस्मेटिक प्रोडक्ट को इंजेक्शन के रूप में इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। कॉस्मेटिक्स केवल स्किन पर लगाने के लिए होते हैं, न कि शरीर में इंजेक्ट करने के लिए। सवाल- सीडीएससीओ ने किन इंजेक्शन्स को गैरकानूनी बताया गया है? जवाब- 'ग्लो' या 'स्किन गोरा करने' के नाम पर दिए जा रहे सभी इंजेक्टेबल ट्रीटमेंट्स CDSCO के नियमों के खिलाफ हैं। इन कॉस्मेटिक प्रोडक्ट्स को इंजेक्शन के रूप में इस्तेमाल करने की अनुमति नहीं है। सवाल- क्या भारत में ग्लूटाथियोन इंजेक्शन कॉस्मेटिक इस्तेमाल के लिए अप्रूव्ड नहीं है? क्या डॉक्टर ऑफ-लेबल इनका इस्तेमाल कर रहे हैं? जवाब- हां, भारत में ग्लूटाथियोन इंजेक्शन को 'स्किन व्हाइटनिंग/ग्लो' के लिए मंजूरी नहीं है। इन्हें कुछ मेडिकल कंडीशन्स (जैसे एंटीऑक्सिडेंट सपोर्ट) के लिए इस्तेमाल किया जाता है, लेकिन ब्यूटी या स्किन लाइटनिंग के लिए इसका इस्तेमाल अप्रूव्ड नहीं है। सवाल- कॉस्मेटिक इंजेक्शन के क्या साइड इफेक्ट्स हो सकते हैं? जवाब- मेडिकल प्रोसीजर होने से इसके कई शार्ट और लॉन्ग टर्म साइड इफेक्ट्स हो सकते हैं। कॉस्मेटिक इंजेक्शन के साइड इफेक्ट्स- सुन्नपन, सांस लेने में दिक्कत, रेडनेस, सूजन, ब्लीडिंग, इंफेक्शन एलर्जिक रिएक्शन,चेहरे में टेढ़ापन, मसल वीकनेस, वेस्कुलर ऑक्लूजन सवाल- क्या इससे इन्फेक्शन हो सकता है? जवाब- हां, अगर-अनट्रेंड या अनक्वालिफाइड व्यक्ति इंजेक्शन दे। सुई या उपकरण रीयूज किए जाएं। इंजेक्शन के बाद स्किन की सही केयर न की जाए तो इन्फेक्शन का रिस्क बढ़ता है। सवाल- क्या इससे नर्व डैमेज का रिस्क भी हो सकता है? जवाब- हां, अगर- इंजेक्शन गलत जगह लगे। गलत तरीके से दिया जाए। इंजेक्शन सीधे नर्व के पास या अंदर लग जाए।दवा गलत लेयर में चली जाए। चेहरे की एनाटॉमी की सही समझ न हो तो नर्व डैमेज (नसों को नुकसान) का रिस्क हो सकता है। सवाल- क्या इससे फेशियल पैरालिसिस भी हो सकता है? जवाब- हां, कुछ कंडीशंस में फेशियल पैरालिसिस का रिस्क हो सकता है। जैसे- इंजेक्शन फेशियल नर्व के पास लग जाए।दवा गलत जगह फैलकर नर्व सिग्नल ब्लॉक कर दे। अनट्रेंड व्यक्ति द्वारा गलत तकनीक से इंजेक्शन लगाए जाए। हालांकि ये काफी रेयर होता है। सवाल- क्या ये इंजेक्शन जानलेवा भी हो सकता है? जवाब- हां, खतरा तब बढ़ता है, जब- एलर्जिक रिएक्शन हो जाए। वस्कुलर ऑक्लूजन (ब्लड वेसल्स का ब्लॉक होना) हो जाए। गंभीर इन्फेक्शन हो जाए। गलत दवा/ओवरडोज ले लिया जाए। सवाल- लोगों का मानना है कि सारे सेलिब्रिटीज ये ट्रीटमेंट करवाते हैं। तो ये अनसेफ कैसे हो सकता है? जवाब- सेलिब्रिटीज आमतौर पर अनुभवी डॉक्टर और हाई-स्टैंडर्ड मेडिकल सेटअप में ये प्रक्रियाएं कराते हैं। जबकि आम लोग अनट्रेंड लोगों या असुरक्षित जगहों पर इन्हें करवा लेते हैं, इससे रिस्क बढ़ जाता है। इसके अलावा- सोशल मीडिया पर दिखने वाला 'ग्लो' अक्सर मेकअप, फिल्टर और लाइटिंग का भी असर होता है। कॉस्मेटिक इंजेक्शन एक मेडिकल प्रोसीजर है। इसमें इन्फेक्शन, एलर्जी या नर्व डैमेज जैसे जोखिम पूरी तरह खत्म नहीं होते। इसलिए सिर्फ सेलिब्रिटी ट्रेंड के आधार पर इसे सुरक्षित मानना सही नहीं है। सवाल- आम लोगों के लिए ये ज्यादा खतरनाक क्यों हैं? जवाब- इसके कई कारण हैं, जैसे- कई लोग पार्लर से इंजेक्शन लगवा लेते हैं, जहां क्लिनिक जैसा स्टरलाइजेशन और सेफ्टी नहीं होती। मेडिकल हिस्ट्री, एलर्जी या स्किन टाइप का आंकलन नहीं होता। इंजेक्शन गलत जगह या गलत मात्रा में लग सकता है। रिएक्शन होने पर तुरंत इलाज की सुविधा नहीं होती। सही देखभाल न होने से इन्फेक्शन का रिस्क बढ़ता है। सवाल- ग्लोइंग स्किन पाने का बेस्ट तरीका क्या है? जवाब- ग्लोइंग स्किन के लिए महंगे इंजेक्शन जरूरी नहीं होते। सही स्किनकेयर, हेल्दी लाइफस्टाइल और सन प्रोटेक्शन से नेचुरल और लॉन्ग-लास्टिंग ग्लो पाया जा सकता है। सही खानपान से स्किन नेचुरली ग्लो करती है, जबकि गलत चीजें इसे डल और एक्ने-प्रोन बना सकती हैं। 'इंस्टेंट ग्लो' का आकर्षण भले ही बढ़ रहा हो, लेकिन सेफ और लंबे समय तक टिकने वाला निखार केवल सही स्किनकेयर, बैलेंस्ड डाइट, सन प्रोटेक्शन और हेल्दी लाइफस्टाइल से ही संभव है।

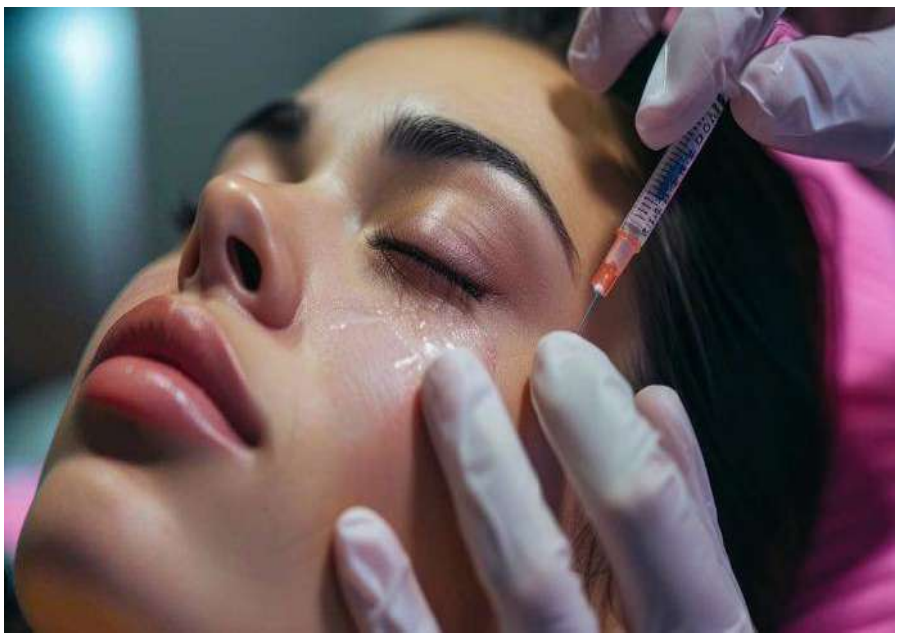

स्वत्वाधिकारी
प्रकाशक एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
श्री आधुनिक प्रिन्टर्स
एण्ड
पैकेजर्स प्रा.लि.
1- मिर्जापुर रोड नैनी
प्रयागराज उ.प्र. 211008 से
मुद्रित एवं एम2ए/25 एडीए
कालोनी नैनी प्रयागराज
211008 (उ.प्र.)
से प्रकाशित
सम्पादक
डॉ.दीपक अरोरा
मो 0 न0 09415608783
RNI No. UPHIN/2012/41154
website:www.adhuniksamachar.com
नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।